बिहार शताब्दी-वर्ष के अवसर पर

नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक

नाट्योत्सव

8 से 14 फरवरी, 2012

कालिदास रंगालय, पटना

सम्पादक

कुमार शांतरक्षित

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार एवं कला-संस्कृति एवं
युवा विभाग, बिहार सरकार के सौजन्य से

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला-जागरण, पटना

www.chaturbhujdrama.com, apriyadarshi76@yahoo.in, ksrakshit@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

IFFCO

कदम-कदम पर

क्रांति

...किसानों के लिए

... समाज के लिए

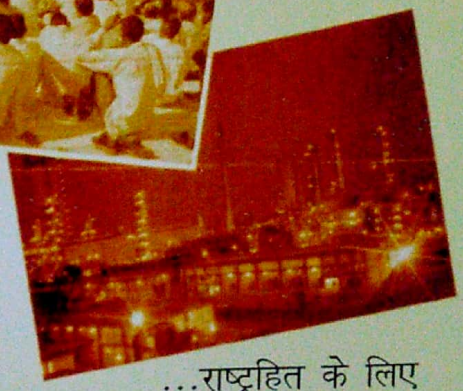

...राष्ट्रहित के लिए

यही है

इफको

की पहचान

हमारा प्रयास
जागरूक एवं खुशहाल किसान

चार दशकों से इफको का प्रयास रहा है कि भारत का किसान हर दृष्टि से सम्पन्न बने और इसके लिए सहकारिता को माध्यम बनाते हुए इफको विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी और कृषि आधारित विकास के लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। इफको को गर्व है कि आज हम किसान भाईयों के चेहरे पर मुस्कान ला पाने में सफल हो पाए हैं।

अपने 5 संयंत्रों और 19 सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से इफको किसानों तक उत्तम गुणवत्ता वाले उर्वरकों के अलावा, सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ तो पहुंचा ही रही है, साथ ही इफको किसान संचार लिमिटेड के माध्यम से मोबाइल फोन के द्वारा भी कृषि क्रांति लाने की चेष्टा कर रही है।

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर को-आपरेटिव लिमिटेड

इफको सदन, सी-1, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, साकेत प्लेस, नई दिल्ली-110017

दूरभाष: 91-11-26510001, 91-11-42592626 (पीबीएक्स) वेबसाईट : www.iffco.in

Scanned by CamScanner

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, कला-संस्कृति एवं युवा विभाग
और शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के सहयोग से

बिहार शताब्दी वर्ष के अवसर पर डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव-2012

बिहार, पटना

08 से 14 फरवरी, 2012

सम्पादक

कुमार शान्तरक्षित

स्थान

कालिदास रंगालय, पटना

❖

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www-chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/ksrakshit@rediffmail.com/kalajagran@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष की कलम से

'कला-जागरण' एवं 'मगध कलाकार' के संयुक्त तत्वावधान में हम पुन: सात दिवसीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन कर रहे हैं। ऐतिहासिक नाटकोत्सव को लेकर कई प्रश्न किए गए-जो स्वाभाविक है। उत्तर के रूप में सविनय निम्नांकित निवेदन है:-

हिन्दी में इतिहास सम्मत जीवन चरितात्मक नाटक बहुत कम लिखे गए हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जयशंकर प्रसाद ने किया था, पर उनकी परम्परा का समुचित विकास नहीं के बराबर हुआ। यदि कुछ नाटककारों की कृतियों का नामोल्लेख इस दिशा में किया जा सकता है तो नि:संदेह अग्रणी पंक्ति के नाटककारों की श्रेणी में डॉ. चतुर्भुज का नाम स्वाभाविक रूप से उभर कर सामने आता है, जिन्होंने पिछली सदी के पांचवें दशक के बाद अनेक रंगमंचीय ऐतिहासिक नाटकों का सृजन कर हिन्दी नाट्य जगत को समृद्ध करने का स्तुत्य कार्य किया है। आज उसी महान नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में 'तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव' के रूप में आयोजन कर हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

इतिहास के विशिष्ट व्यक्तियों पर लिखित नाटक इतिहासिक सम्मत होता है- पर वह मात्र इतिहास नहीं होता। इतिहास केवल नाम देता है, घटनाएं देता है, तिथियां देता है, उनकी प्रेरक भावनात्मक शक्तियों का उद्घाटन तो साहित्य ही कर सकता है-और नाटक उसी साहित्य की एक विधा है। इस ऐतिहासिक नाट्योत्सव के माध्यम से हमारा प्रयास है- आज की पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ियों को किवदंतियां नहीं, बल्कि भारत का गौरवशाली इतिहास, गुलामी की त्रासदी, यंत्रणा, पीड़ा, छटपटाहट और अकुलाहट के साथ- साथ स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग-बलिदान, देशभक्ति तथा राष्ट्रीय चेतना के उच्च आदर्शों से परिचित कराना, ऐतिहासिक पात्रों से प्रेरणा लेकर भविष्य की सुरक्षा हेतु उन्हें सचेत करना एवं जन मानस में सच्ची देश भक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना का संचार करना।

आशा है, रंगप्रेमियों को ये प्रस्तुतियां आकर्षक लगेंगी।

गणेश प्रसाद सिन्हा
अध्यक्ष, कला-जागरण

प्रकाशक

कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा,** अध्यक्ष
C/11, कंकड़बाग, कॉलोनी, पटना-20
(मो. 09431622131)

: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1 (मो. 9431066931)

मगध कलाकार : **डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र,** अध्यक्ष
उपनिदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्,
शिवपूजन सहाय पथ, सैदपुर
पटना-800 004
(मो. 09430212579)

अशोक प्रियदर्शी, सचिव
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6, श्रीकृष्ण नगर, पटना-1
(मो. 09334525657)

अक्षर संयोजक : **फकीर मुहम्मद,** कवर डिजाइन- **सुधीर कुमार**

मुद्रक : **वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि.**
अयोध्या अपार्टमेंट (बोर्ड ऑफिस के सामने)
फ्रेजर रोड, पटना-800 001
9431040914/2222920
vatayanprabhat@gmail.com

Scanned by CamScanner

देबानन्द कुँवर
राज्यपाल

RAJ BHAVAN, PATNA-800 022
Tel.: 0612-2217626, Fax: 2786184

Devanand Konwar
GOVERNOR

21 जनवरी, 2012

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार', पटना द्वारा डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव पटना में दिनांक 08-14 फरवरी, 2012 को मनाया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी।

नाट्य-विधा का इतिहास बिहार प्रदेश का बहुत पुराना है। हिन्दी नाटक समाज, मगध आर्टिस्ट्स, तरुण भवतारिणी समिति, आर्ट एण्ड आर्टिस्ट्स कुछ ऐसी संस्थाएँ रही हैं, जिनके माध्यम से नाटकों का मंचन किया जाता रहा है। इन संस्थाओं में प्रदर्शित नाटकों में तीन पीढ़ी के कलाकार एक साथ मंच पर अभिनय करते रहे हैं। डॉ. चतुर्भुज उसी कड़ी के नाटककार, अभिनेता, निदेशक रहे हैं, जिन्होंने हिन्दी नाट्य जगत को सुसमृद्ध किया है।

मैं आशा करता हूँ कि एक सप्ताह तक चलने वाले इस अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव से देश-प्रेम, भाईचारा और राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

इस अवसर पर मैं आयोजकों को बधाई देता हूँ और नाट्योत्सव के निर्विघ्न एवम् सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

देबानन्द कुँवर

देबानन्द कुँवर

Scanned by CamScanner

मुख्यमंत्री
बिहार

पटना
02.02.2012

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि बिहार के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में मगध कलाकार संस्था द्वारा दिनांक 08 फरवरी से 14 फरवरी, 2012 तक अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन महान् नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

नाट्य कला भावाभिव्यक्ति की वह गंभीर विधा है जिसके माध्यम से संवेदनशील मानव-मन पर अमिट छाप छोड़ी जा सकती है। सामाजिक विषमताओं, ह्रासमान जीवन मूल्यों एवं ऐतिहासिक विषयों पर आधारित नाटक का मंचन व्यक्ति एवं समाज को एक नया रास्ता दिखाने में सफल हो सकता है।

नाट्योत्सव के आयोजकों एवं कलाकारों को मेरी मंगलकामनाएँ तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नीतीश कुमार)

Scanned by CamScanner

सुशील कुमार मोदी
उप-मुख्यमंत्री
बिहार

पटना
139/दिनांक 27.01.12

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बिहार के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में तथा डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन दिनांक 8 फरवरी से 14 फरवरी, 2012 तक मगध कलाकार द्वारा किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका एक स्वागत योग्य कदम है।

मैं नाट्योत्सव के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

शुभ कामनाओं के साथ,

भवदीय,

(सुशील कुमार मोदी)

Scanned by CamScanner

सुखदा पांडेय
Sukhada Pandey

मंत्री
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग,
बिहार
Minister
Deptt. of Art. Culture & Youth
Bihar

Ref.No. / पत्रांक.....

Date / दिनांक 24.01.2012

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि 'मगध कलाकार' पटना के द्वारा तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव स्व. डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिनांक 08 से 14 फरवरी, 2012 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय अत्यंत ही सराहनीय है।

शताब्दी वर्ष में बिहार की विरासत के दम-खम और चमक का स्मरण कराने वाले वीर योद्धाओं एवं वीरांगनाओं की पृष्ठभूमि के कलेवर से सुसज्जित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव मगध कलाकार की एक सुन्दर पहल है। बिहार की कला संस्कृति और इतिहास के विविध रूपों को अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में लगातार सार्थक प्रयास किया जाना चाहिए। यह नाट्योत्सव इसकी एक शृंखला बनेगी, ऐसा विश्वास है। आशा करती हूँ कि भविष्य में भी 'मगध कलाकार' अपने सकारात्मक प्रयासों को न सिर्फ जारी रखेगा वरन् अपने प्रयासों को और नये आयाम भी देगा।

मैं इस सांस्कृतिक संस्था से जुड़े सभी सदस्यों तथा स्मारिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

सुखदा पांडेय

(सुखदा पांडेय)

कार्यालय : विकास भवन, नया सचिवालय, पटना - 800 001 आवास: 24/10,बेली रोड, पटना
मोबाइल. : +91 9431021852, टेलि-फैक्स: 0612 2215688 (का.) 0612-2539809 (आ.)
E-mail: sukhadapandey@yahoo.com

Scanned by CamScanner

श्याम रजक
شیام رجک

मंत्री
खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक 391/आ०

दिनांक 29-01-2012

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आगामी 8 फरवरी से 14 फरवरी 2012 तक बिहार के महान नाटककार डॉ० चतुर्भुज की स्मृति में कालिदास रंगालय में अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन किया जा रहा है। फिल्म, टी० वी० इत्यादि विविध आधुनिक मनोरंजन सुविधाओं के बावजूद आज भी नाटक लोगों के स्वस्थ्य मनोरंजन का सशक्त माध्यम है। ज्वलंत सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य समस्याओं से सम्बंधित नाटकों का प्रदर्शन कर नाटक को हमेशा मनोरंजन का स्वस्थ्य माध्यम बनाये रखा जा सकता है। "मगध आर्टिस्ट" का यह प्रयास निरन्तर जारी एवं सफल रहे ऐसी मेरी शुभकामना हैं।

(श्याम रजक)

सेवा में,
डॉ० अशोक प्रियदर्शी
सचिव,
मगध आर्टिस्ट
श्री कृष्णा नगर, पटना।

कार्यालय : ग्राउंड फ्लोर, पुराना सचिवालय, पटना, बिहार। दूरभाष :- 0612-2217819, फैक्स :- 0612-2215077
आवासीय कार्यालय : 20 ए, हार्डिंग रोड, पटना। दूरभाष :- 0612- 2205740, दूरभाष + फैक्स :- 0612-2215276, मो० - 9431022200
E-mail : shyam@shyamrajak.com Website : www.shyamrajak.com

Scanned by CamScanner

अंजनी कुमार सिंह
भा.प्र.से.
प्रधान सचिव
शिक्षा विभाग
बिहार सरकार, पटना

Ph : 0612-2217016 (O)
0612-2215250 (R)
Fax : 0612-2235108
E-mail : anjani41@yahoo.com

Ref. 33/C

Date 24/1/12

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता है कि बिहार प्रदेश के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में मगध कलाकार एवं कला-जागरण के संयुक्त प्रयास से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव पटना में 8 फरवरी से 14 फरवरी 2012 तक आयोजित किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

नाट्योत्सव के सफल संचालन एवं स्मारिका के प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामना है।

24/1/12

(अंजनी कुमार सिंह)
प्रधान सचिव

सेवा में,
डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी,
सचिव, मगध कलाकार
क्वार्टर नं॰ - 106, रोड नं॰ 6
श्रीकृष्ण नगर, पटना - 800001

Scanned by CamScanner

डॉ० के० पी० रामय्या
आयुक्त
पटना प्रमंडल, पटना

दूरभाष सं० : (0612) 2219205 (कार्य०)
(0612) 2233578
फैक्स : (0612) 2230788

दिनांक.....

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में 8 फरवरी से 14 फरवरी 2012 के बीच तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन किया जा रहा है इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

इस आयोजन के लिए मैं मगध कलाकार के सचिव तथा अन्य सदस्यों को हृदय से साधुवाद देते हुए इस आयोजन में भाग लेने वाले कलाकारों और संस्थाओं को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि डॉ॰ चतुर्भुज के व्यक्तित्व और कृतित्व को याद करते हुए नई पीढ़ी को प्रेरित करने का यह अनुपम अनुष्ठान होगा।

नाट्योत्सव की यादगार सफलता तथा स्मारिका के संग्रहणीय तथा पाठनीय होने के लिए हमारी अनन्त शुभकामनाएँ।

(डॉ० के०पी० रामय्या)

Scanned by CamScanner

सी. ललसोता,
भा.प्र.से.
प्रधान सचिव

बिहार सरकार
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
पटना, बिहार

संदेश

हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है सांस्कृतिक संस्था ''मगध कलाकार'' द्वारा बिहार प्रदेश के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में तृतीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव का आयोजन पटना में दिनांक 08-14 फरवरी, 2012 तक आयोजित किया जा रहा है।

बिहार में ऐतिहासिक विषयों पर आधारित नाटकों के मंचन की परम्परा रही है। इस प्रकार के नाटकों के मंचन से नयी पीढ़ी को अपने ऐतिहासिक महत्व के धरोहरों एवं महापुरुषों की व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होने का अवसर मिलता है।

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार, पटना की सांस्कृतिक सम्पदाओं को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा खेल, समाज सेवा तथा कला के विभिन्न विधाओं में प्रतिभाओं को तराश कर उन्हें राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए कृत संकल्प है।

आयोजन की सफलता की मैं कामना करता हूँ तथा इस आयोजन से जुड़े हुए रंगकर्मियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

11/1/12
(सी0 ललसोता)

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम	:	डॉ चतुर्भुज
जन्म तिथि	:	15.01.1928 ई. निधन : 11.08.2009 ई.
जन्म स्थान	:	मुहल्ला– महल पर, बिहार शरीफ, जिला–नालन्दा
शिक्षा	:	(क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में) (ख) पी–एच. डी., शोध विषय– ''प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक– एक अध्ययन''
पिता	:	स्व. मुंशी प्रयाग नारायण
पत्राचार का पता	:	क्वांटर नम्बर–106, रोड नं.–06, श्री कृष्ण नगर, पटना–800001
फोन	:	9334123150, 9334525657
वेबसाइट	:	www.chaturbhujdrama.com

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। इन्होंने अपने जीवन के इक्यासी वसंत देखे। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य–लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार–प्रसार में लगा दिया। सम्पूर्ण जीवनकाल में हिन्दी के माध्यम से नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य ग्रन्थों की रचना भी इन्होंने की है।
2. संदर्भ ग्रन्थों में इनके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसेः– साहित्य अकादमी के 'हूज हू'' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश'' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हूँ' (पृष्ठ–146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पैसेफिक हूज़ हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। हाल में प्रकाशित 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इसके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। अभी हाल में नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।
3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी–एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय, मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोधकार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ0 चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी–एच. डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :–

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।
5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी–रोटी से जोड़कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम. ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहाँ प्रथम नाट्यशिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडियेट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।
6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्यप्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्यप्रदर्शन, मनोरंजनकर मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।

Scanned by CamScanner

7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार–प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े–छोटे लोग परिचित हैं।
8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थियेटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।
9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार–प्रसार हुआ।
10. फिल्म और रंगमंच के नामी कलाकार श्री पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग–विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।
11. नव नालन्दा महाविहार के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्धग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देशों के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए. एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक थे।
12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक शैक्षणिक संस्थाएं हैं– एस.यू. कॉलेज, हिलसा, रांची समाज कल्याण समिति, मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष, महिला महाविद्यालय, खगौल, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।
13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डा. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झांकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आजतक क्रियाशील है।
14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था– 'भारत के प्रमुख नाटक और प्राचीन ग्रीक नाटक–एक अध्ययन।'
15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं– 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।
16. उत्तर–दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थियेटर के संस्थापक निदेशक श्री अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद किया। कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार श्री लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार सरकार के पदाधिकारी श्री कुमार शांत रक्षित को जाता है। अभी हाल में भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।
17. डॉ. चतुर्भुज के कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है।

नाट्य–लेखन

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य–लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था–मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य–लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें क़दम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। हर रंगसंस्थाओं की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक अभिनीत हो।
19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी है अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र–पत्रिकाएं रही हैं–विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।
20 डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो–टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ो नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।

Scanned by CamScanner

21. उत्तर–प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय–समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।
22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं । चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।
23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' हाल ही में दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।
24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।
25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे–'नाट्य–शिल्प–विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था कि उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।
26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। 'समुद्र का पक्षी' ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगज़ेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने उसमें स्वयं भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास राजदर्शन है। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीरकासिम के चरित्र पर आधारित है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। और तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध के गृह–त्याग से लेकर उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित–'तथागत'। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।
27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु–मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है वहीं अरावली का शेर, भीष्म–प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर–पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग–विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्धधर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।
28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा 'मेरी रंगयात्रा' शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28 आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन–यापन हेतु उन्होंने छोटी–छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर–राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाईन की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर–राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग–दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश–विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक–सम्पादन–विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादनकार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।
30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, रॉची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं– गणतन्त्र की भूमि

Scanned by CamScanner

वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द–प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवमंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव–मस्तानी, झेलम के किनारे, रेडियो नाट्य शृंखला के अन्तर्गत तेरह धारावाहिक जातक कथा पर आधारित नाटक आदि।

पुरस्कार / सम्मान :–

31. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य–लेखन पर उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज को सम्मानित किया गया, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव–राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, साहित्कार–सम्मान–समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, नाटककार के रूप में सन् 2008 में कृष्णा मूवीज द्वारा सम्मानित, वामा वेलफेयर सोसायटी द्वारा 'कला वारिधि' 2004 से सम्मानित, शांति प्रियदर्शी रचना पुरस्कार से 1999 ई. में सम्मानित, स्टेज, पटना द्वारा नाट्य उन्नयन एवं संवर्द्धन हेतु सन् 2004 में डॉ. रंगी–लक्ष्मी स्टेज सम्मान से सम्मानित, आनन्दाश्रम की ओर से 1997 ई. में सम्मान प्राप्त, अशोक नगर चित्रगुप्त परिषद् द्वारा सन् 2003 में स्मारिका सम्पादन हेतु सम्मान, श्रुति कला परिषद् की ओर से नाट्य लेखन के लिए वरिष्ठ पुरस्कार सन् 1994 ई. में, सन् 1998 में दि इण्डियन सोसाइटी ऑफ क्रियेटिव आर्ट्स की ओर से सम्मानित, 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, विश्व भारती भाषा साहित्य समागम की ओर से सन् 2003 ई. में सम्मानित। इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य–लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक–रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य–प्रशिणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन–संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन–संचार के छात्रों को भी रेडियो–पत्रकारिता और दूरदर्शन–पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन–काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन–संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवतः उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म–पितामह क़हे जाते रहे।

चतुर्भुज–साहित्य

नाटक :–

पाटलिपुत्र का राजकुमार, कलिंग–विजय, सिकन्दर–पोरस, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, रावण, मेघनाद, कंसवध, श्रीकृष्ण, कर्ण, भीष्म–प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, नदी का पानी, भगवान बुद्ध, बाबू विरंचीलाल, मुद्राराक्षस, अरावली का शेर, नूरजहां, शिवाजी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, कृष्ण कुमारी, पीरअली, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, मोर्चे–पर, बहादुरशाह, शाही अमानत, विजय के क्षण, बादल का बेटा, महिषासुर वध, कारागार, चतुर्भुज रचनावली (तीन खंडों में)।

उपन्यास/कथा संग्रहः–

समुद्र का पक्षी– (मनूची के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास),
राजदर्शन– (मुंगेर का नवाब मीरकासिम के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास)
तथागत – (भगवान बुद्ध के गृह–त्याग से उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित)
इतिहास बोल उठा– (खोजपूर्ण ऐतिहासिक लेख संग्रह)
कमरे की छाया – (उल्लेखनीय कहानी–संग्रह)
मेरी रंगयात्रा (आत्मकथा)– डॉ. चतुर्भुज के जीवन की संघर्षशील कथा।

इतिहास :– औरंगज़ेब, भारत के बौद्ध विहार, प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास

अंग्रेजी/ मैथिली/तमिल ग्रन्थः–

Memoirs of William Tayler (Commissioner of Patna in 1857), History of the Great Mughals, The Rani of Jhansi (Drama), The Great Historical Dramas, रावण (मैथिली और तमिल अनुवाद नाटक)।

अप्रकाशित– नाट्य शिल्प विज्ञान (हिन्दी), Raavan, Shri Krishn, Kans-Vadh, Pataliputra Ka Rajkumar, Peer Ali (Translated in English)

Scanned by CamScanner

आयोजन समिति

सुमन कुमार
सचिव, कला–जागरण, पटना
09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग–क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी, प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म हमार देवदास, लागल नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक –डिस्कवरी ऑफ इन्डिया से जुड़े। कला–संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला–जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटकों में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी रह चुके हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं–सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर–पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा।

डॉ. अशोक प्रियदर्शी
सचिव, मगध कलाकार, पटना
09334535657

डॉ. चतुर्भुज द्वारा स्थापित नाट्य संस्था–'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई.) को गौरवान्वित करने वाले डॉ. अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रह कर सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवारत हैं। राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों के मंचीय संचालन, विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ. प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा दर्शकों के बीच चिर–परिचित बन गयी है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी–रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र करने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ. चतुर्भुज के कष्ट–साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। डॉ. चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से प्रकाशन और डॉ. चतुर्भुज की आत्मकथा–'मेरी रंगयात्रा का प्रकाशन डॉ. प्रियदर्शी ने अपने सम्पादन में किया है। डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ. प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। इन दिनों 'राजनीति चाणक्य' मासिक पत्रिका को आज की युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

आयोजन समिति के सदस्य

गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, विश्वनाथ पाण्डेय, डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ. शैलेश्वर सती प्रसाद, डॉ. किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, अमितेष, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, उमेश नारायण मिश्र, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, दीपक प्रियदर्शी, कृष्ण मोहन प्रसाद, मनोरमा देवी, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, गौतम घोष, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, विशुद्धानन्द, नीलेश्वर मिश्रा, अजीत गांगुली, आशीष कुमार मिश्र, दीनानाथ सहनी, राजकुमार प्रेमी, शीलभद्र, नितेश कुमार, नीरज कुमार, हीरालाल, रंजीत, कुणाल, आशुतोष, विजय शंकर, राजीव रंजन श्रीवास्तव, रणजीत कुमार, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अणिमा, तूलिका, निधि इत्यादि।

विशेष आभार

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, कला–संस्कृति विभाग, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

Scanned by CamScanner

अमेरिकन नाटक

—डॉ. चतुर्भुज

(ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज अपने लंबे रंगमंचीय अनुभवों के आधार पर जीवन के अन्तिम दिनों में 'नाट्य शिल्प विज्ञान' नामक एक पुस्तक लेखन में व्यस्त थे जिसके माध्यम से रंगकर्मी नाट्य विद्या के विभिन्न पक्षों से अवगत हो पायें। पुस्तक अधूरी ही रही। उसी अधूरी पुस्तक का एक अंश आपके समक्ष अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।)

अमेरिकन थियेटर का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इसकी आयु अधिक से अधिक तीन सौ वर्षों की है। अमेरिकन थियेटर का विकास मूल रूप से इंग्लैण्ड के थियेटर पर आधारित है। जब यूरोपवासी पहले पहल उस नई दुनिया में पहुंचे तब उन्होंने पाया कि वहां के लोगों में सुन्दर और आकर्षक उत्सव तथा नृत्य की परम्परा है जिसमें नाटक के तत्व बिखरे थे। अंग्रेजों के पहुंचने के पहले उस नई दुनिया में स्पेन और फ्रांस के लोग पहुंच चुके थे। 1598 ई. में स्पैनी भाषा में एक नाटक अभिनीत हुआ। 1606 में एक फ्रेंच नाटक खेला गया। लेकिन इसका कोई प्रभाव वहां नही पड़ा।

अमेरिका की भूमि में नाटक का बीज डालने वाले अगर कोई थे तो वे अंग्रेज ही थे। जो अंग्रेज अभिनेता आये, उनके पास थियेटर की सैकड़ो वर्ष की पुरानी परम्परा थी। नई दुनिया के वासी पुराने ख्याल के थे। 1665 ई. में वर्जिनिया में एक नाटक हुआ था। इस नाटक से कुछ लोग बहुत नाराज हुए। मुकदमा चला। लेकिन सभी व्यक्ति निर्दोष घोषित किये गये।

1714 ई. में अमेरिका में पहला नाटक प्रकाशित हुआ। लेकिन यह नाटक कभी मंचित नहीं हुआ। फिर दो वर्षों के बाद एक सौदागर ने पहला खेलघर बनाया जहां कुछ नाटक अभिनीत किये गये। 1745 ई. में डॉक स्ट्रीट में न्यू थियेटर नाम का एक नाटक घर खुला। बाद में इसमें आग लग गई और यह समाप्त हो गया।

1750 ई. में प्यूरिटन सम्प्रदाय के विरोध स्वरूप नाट्य प्रदर्शन पर रोक लग गई।

लंदन के एक थियेटर व्यसनी विलियम हेलम ने 1752 ई. में अमेरिका में हेलम कम्पनी स्थापित किया। बड़े जोश–खरोश के साथ 'दि मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' नाटक अभिनीत किया गया। यह कम्पनी कई जगह नाटक प्रदर्शित करती रही।

बाद में हेलम कम्पनी एक दूसरी अंग्रेजी कम्पनी के साथ मिल गई। संयुक्त कम्पनियों का अध्यक्ष था डेविड डुग्लास जो स्वयं एक अच्छा अभिनेता था। अगले बीस वर्षों तक यह कम्पनी नाटक में सक्रिय रही। अमेरिका के अलावा वेस्ट इंडीज के कई शहरों में भी इसने अपने नाटक प्रदर्शित किये। फिर ये जमायका चली गई। इस दल ने कई जगहों पर स्थायी नाटक घर का निर्माण किया।

आज के थियेटर से उन दिनों का अमेरिकन थियेटर बिल्कुल भिन्न था। शहर में एक नोटिस के जरिये यह जानकारी दी जाती थी कि सोमवार, बुधवार और शनिवार को छै बजे से नाटक का प्रदर्शन होगा। अपराह्न में या रविवार के रोज नाटक नहीं होते थे। भीड़ इसलिए अधिक होती थी कि डुग्लास मुख्य भूमिका करता था। लोग नाटक के रोज पांच बजे शाम को ही एक नौकर नाटक घर में भेजते थे जो एक बढ़िया सीट चुनकर दखल जमा लेता था।

नाटकघर जाने का रास्ता कीचड़ से भरा होता था। स्टेज के आगे मोमबत्तियां जल जाती थीं। नाटकघर में करीब छः सौ आदमी आ पाते थे। सामने का हरा परदा धीरे–धीरे लिपट कर ऊपर जाता था और दूसरा नीचे आता था। अभिनय की कोई खास शैली नहीं होती थी। नाटकों का मुख्य आधार शेक्सपीयर के नाटक होते थे। मोमबत्तियों के जल जाने पर नई मोमबत्तियां फिर जलाई जाती थीं। नाटक लगभग साढ़े दस बजे समाप्त होता था।

इसी बीच अमेरिकन स्वाधीनता संग्राम हुआ जिसमें अंग्रेजों ने हार मान ली। अमेरिकन आजादी के बाद स्थितियां बदलने लगीं। 1788 ई. तक यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका का जन्म हुआ जिसमें कई राज्य सम्मिलित थे। अब पेशेवर थियेटर कम्पनियों की सक्रियता बढ़ने लगी। आवादी भी बढ़ने लगी। थियेटर मंडलियों की संख्या में भी वृद्धि हुई। टॉमस ए. कूपर नामक एक अभिनेता ने अमेरिकन स्टेज को एक नई शैली दी।

पहले यह परम्परा थी कि स्थानीय अधिकारियों से अनुमति लेकर प्रदर्शन होते थे। लेकिन 1789 ई. में यह बंदिश हटा दी गई। प्यूरिटन ने भी विरोध करना छोड़ दिया। नाटक कम्पनियों को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के हर शहर में प्रदर्शन करने की पूरी स्वाधीनता मिल गई। नये नाटक घरों का निर्माण होने लगा। सर्कस में भी छोटे–मोटे नाटक जोड़े जाते थे।

इस बीच दो नाटककार बहुत प्रसिद्ध हुए– Royall Tyler और William Dunlap. Royall Tyler बड़ा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। यह सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टिस भी बना। इसका नाटक The Contrast पहला अमेरिकन नैटिव कॉमेडी कहा जाता है। आज भी इस नाटक की चर्चा

Scanned by CamScanner

HOTEL GARGEE GRAND

Plot No. 825, exhibition Road, Patna - 800 001
Ph. : - 0612-2500535 / 36/ 37/ 38
Fax : 0612-2500539 / Mobile No. : 9771471000
Website : www.gargeegrand.com / Email : fomgargeegrand@gmail.com

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

इंडियन इंस्टीच्युट ऑफ हेल्थ एजुकेशन एण्ड रिसर्च

हेल्थ इंस्टीच्युट रोड, बेउर, पटना-२

(बिहार सरकार, भारतीय पुनर्वास परिषद, भारत सरकार तथा आइ.ए.पी.से मान्यता प्राप्त)

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से संबंधन प्राप्त

We Impart:-

POST GRADUAGE COURSES:

- **MPT** Master of Physiotherapy
- **MOT** Master of Occupational Therapy
- **MPO** Master of Prosthetic & Orthotic
- **MASLP** Master of audiology speech & Language Pathology
- **BPT** Bachelor of Physiotherapy
- **BOT** Bachelor of Occupational Therapy
- **BPO** Bachelor of Prosthetic & Orthotic
- **BASLP** Bachelor of Audiology Speech & Language Pathology
- **BMRT** Bachelor of Radio Imaging Technology
- **BMLT** Bachelor of Medical Laboratory Technology
- **B.Ed.** (Special Education)
- **B.Opth.** Bachelor of Ophthalmology

संस्थान द्वारा संचालित निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ

- स्वास्थ्य परीक्षण एव परामर्श
- टीकाकरण
- फिजियोथेरोपी
- अकुपेशनल थरेापी
- स्पीच थरेापी
- नेत्र जाँच
- सभी प्रकार की विकलांगता पोलियो,लकवा,गठिया,हड्डी, जोड़एवंनससेसब धित सभी प्रकार के रोगों की जांच एवंउपचार
- हकलाना, तुतलाना सहित गूंगे-बहरों की जाँच एवं उपचार हियरिंग-एड
- मानसिक विकलांगता तथा मंद बुद्धिपता जाँच एवं उपचार
- कृत्रिम हाथ,पैर,कैलीपर,पोलियो के जूते,वैशाखी, सर्वाइकल कॉलर, बेल्ट आदि का निर्माण एवं वितरण
- लाचार विकलांगों को तिपहिया-साकिल तथा व्हीलचेयर
- विकलांगों की शल्य चिकित्सा,सर्जिकल करेक्शन
- रियायती दर पर पैथोलोजिकल जाँच,एक्स-रे, इ.सी.जी. तथा शल्य चिकित्सा।

1 Yr. ABRIDGED DEGREE

DIPLOMA COURSES:

- **DPT** Diploma in Physiotherapy
- **DPO** Diploma in Prosthetic & Orthotic
- **DMLT** Diploma in Medical Lab.
- **D-X-Ray** Diploma in x-ray Technology.
- **DHM** Diploma in Hospital Management
- **DOTA** Diploma in Operation Theather Assistant
- **DECG** Diploma in E.C.G.

certificate courses:

- **CMD** Certific ate in Medical Dressing
- Foundation Course for Teachers in Disability

Form & Prospectus:- Available at the institute counter against payment of Rs. 500/-and DD of Rs. 550/-only for postal delivery, in favour of Indian Institute of Health Education & Research, Patna-2

Eligibility:- For Post Graduate Courses- Degree in the same, 10+2 with science for under Grtaduate & diploma Courses For B.Ed. Degree in any Subjecty.

डॉ. अनिल सुलभ
निदशक-प्रमुख

Registration for Admission into Academic session 2012-2013 going on.

फोन न. : 0612-2253290, 2252999, फैक्स: 0612-2253290,email.iiher_beur@gmail.com, www.iiher.org

Scanned by CamScanner

होती है। William Dunlap पेशेवर नाटककार था। तीस वर्षों तक यह अमेरिकन स्टेज पर छाया रहा। इसे अमेरिकन नाटक का पिता कहा जाता है। यह चित्रकार, नाटककार, मैनेजर, इतिहासकार और देशभक्त के रूप में प्रसिद्ध था। इसका नाटक The Father बड़ा प्रसिद्ध हुआ। इसने कुल छप्पन नाटक लिखे जिनमें रूपान्तर भी थे। इसने History of the American Drama की रचना की। इसके नाटकों में 27 फ्रेंच और जर्मन रचनाओं के रूपान्तर हैं। इसके नाटकों में देश–प्रेम भी उभर कर आया है।

इस अवधि में कुछ और भी नाटककार हुए। John Dalyburk आयरलैण्ड का था। फिलाडेल्फिया के थियेटर में 1816 में मोमबत्ती और तेल के दीपकों को हटाकर पहली बार गैस लाईट का प्रयोग हुआ। अभिनेताओं की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी।

1830 ई. में एक निग्रो Thomas D. Rice ने पहली बार एक गीत–नृत्य का कार्यकम प्रदर्शित किया। निग्रो लोगों ने अपना एक अलग थियेटर बनाया। यह थियेटर न्यूयार्क सीटी में था। Richard III इसका पहला नाटक था।

तैरता थियेटर (Floating Theatre)

सन् 1817 ई. में William Chapman, उसके तीन लड़कों और दो लड़कियों ने एक विचित्र ढंग का थियेटर प्रस्तुत किया। वह था– अमेरिका का पहला जल पर तैरती नाव का थियेटर। इस ढंग का जहाज बनाया गया था जो पानी में तैरता था और उसमें नाटक मंचित होता था। इसे फ्लोटिंग थियेटर कहा गया। यह करीब सौ फीट लम्बा होता था। इसके भीतर एक छोटा मंच होता था। साथ में पिट और गैलरी होती थी। लगभग दो सौ दर्शक इसमें आ सकते थे। यह थियेटर जल मार्ग से एक नदी से दूसरी नदी में और एक शहर से दूसरे शहर में घूम सकता था। यह उन लोगों के लिए सुविधाजनक था जो नदी किनारे रहते थे और शहरों में नाटक देखना जिनके लिए सम्भव नहीं था। 1840–50 के बीच दर्जनों छोटे–बड़े नौकाघर थियेटर काम करने लगे थे। Ira Aldridge पहला निग्रो कलाकार था जिसने कई देशों में थियेटर में नाम कमाया। दौरे पर ही पौलैण्ड में उसकी मृत्यु हो गई।

स्टेज की तकनीक में काफी प्रगति हुई। आग, बाढ़, आंधी, तूफान, भूकम्प आदि के दृश्य नये नये यंत्रों से दिखाये जाने लगे। इस युग में अनेक प्रसिद्ध नाटककार भी हुए। एक महत्वपूर्ण बात यह हुई कि अमेरिकन अभिनेत्रियां पुरुष की भूमिका भी करने लगीं। अभी भी अभिनीत नाटकों में बीस प्रतिशत शेक्सपीयर के ही नाटक होते थे। कुशल अभिनेत्रियों द्वारा पुरुषों की भूमिकाएं दर्शकों को नया आकर्षण देती थीं।

Edwin Booth (1833-1893) क्लैसिकल स्कूल का सबसे बड़ा अभिनेता माना जाता था। एडविन के पिता और भाई भी कुशल अभिनेता थे। जूलियस सीजर में ये सभी एक साथ काम करते थे। कुछ महिला कलाकारों ने भी इस युग में अमेरिकन थियेटर में नाम कमाया। 1909 में 'न्यू थियेटर' की स्थापना हुई जिसमें तीन हजार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था थी। रिवौल्विंग स्टेज था और अत्याधुनिक उपकरण थे। 1910 में 'ड्रामा लीग ऑफ अमेरिका' की स्थापना हुई। 1904 में रेड क्लीफ कॉलेज में नाट्य लेखन पर एक कोर्स प्रारम्भ हुआ। बेकर नाम का एक व्यक्ति 1925 में एक स्नातक स्तर के नाटक स्कूल में निर्देशक नियुक्त हुआ जहां वह 1935 तक नाटक पढ़ाता रहा।

यूजिनी ऑनिल

ऑनिल का जन्म 1888 ई. में हुआ था। इसका पिता थियेटर में काम करता था। इसलिए ऑनिल का पालन–पोषण थियेटर के वातावरण में हुआ। ऑनिल ने अपने पिता के साथ थियेटर में काम किया। बाद में यह कविता लिखने लगा। ऑनिल ने एक से अधिक शादी की। इसकी बेटी का नाम ऊना था जिसकी शादी हास्यरस के प्रसिद्ध अभिनेता चार्ल्स चैपलिन के साथ हुई थी। यह चैपलिन की चौथी पत्नी थी। जीवन के अन्तिम वर्षों में ऑनिल के हाथ कांपने लगे थे। उसने रंगमंच में कई तरह के प्रयोग किये–प्रतीकात्मक, अभिव्यक्ति देने वाला, मुखौटे के जरिये, भीतरी बातों को क्रियात्मक ढंग से निकालना आदि।

1920 ई. में उसे पुलिट्जर प्राईज से सम्मानित किया गया। 1936 ई. में उसे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार भी मिला।

1926 ई. में ड्रामेटिस्ट गिल्ड ने ऐसा विधान बनाया जिससे नाटककार को अपने नाटकों पर स्थायी सर्वाधिकार मिला। इस तरह नाटककारों के अधिकार की रक्षा की गई।

आर्थर मिलर (Arthur Miller)

आर्थर मिलर के दो नाटक बड़े प्रसिद्ध हुए– All My Sons और Death of a Sales man. डेथ ऑफ ए सेल्स मैन एक दुखान्त नाटक है। मिलर का जन्म 1915 ई. में हुआ था। उसने तीन शादियां की। इसका निधन फरवरी 2005 में हुआ। इसके चौबीस नाटकों में से लगभग आधा दर्जन नाटकों का मंचन भारतीय भाषाओं में हुआ। बंगला में 'फेरी वालार मृत्यु' और हिन्दी में 'सेल्समैन रामलाल' इसी के नाटकों का अनुवाद है।

अमेरिकन थियेटर में नाट्य लेखन और मंचन के क्षेत्र में अनेक व्यक्तियों ने योगदान किया। लगभग तीन सौ वर्षों के दरम्यान वहां नाटक ने अभूतपूर्व प्रगति की है। आज अमेरिका में नीचे की कक्षा से लेकर ऊपर की कक्षा तक नाटक के भिन्न–भिन्न पक्षों की पढ़ाई होती है। अमेरिका में सैकड़ों थियेटर हैं। प्रशिक्षण की अच्छी व्यवस्था है। नाटक के भिन्न–भिन्न पक्षों पर अनेक पुस्तकें हर साल प्रकाशित हो रही हैं। ❑

Scanned by CamScanner

आओ धरें एक पग और

–डॉ0 किशोर सिन्हा

प्रारम्भ से ही बिहार प्रदेश अपनी पुरानी पहचान को इतिहास के पन्नों में दबाकर अपनी एक नयी पहचान के साथ उठ खड़ा होता रहा है। उसकी यह पहचान, काल की सीमा रेखा पर अवशेषों की तरह पड़ी है, जिनमें से कई पहचान के संकटों से जूझ रही है.....और कई तब्दील हो गयी है खंडहरों में.....लेकिन उनमें से कई ऐसी भी हैं जिनका बनना अभी शेष है.....।

बिहार प्रदेश पहले कीकट और ब्रात्य के नाम से जाना जाता था जो बाद में भगवान बुद्ध के समय बौद्ध विहारों के कारण 'विहार' और फिर 'बिहार' नाम से मशहूर हुआ। व्रात्यों को पराजित कर आर्यों ने बिहार पर अधिकार जमा लिया, जिसके बाद यह आर्यों की ही भूमि होकर रह गया, जिसमें अनेक संस्कृतियाँ, कलाएं, भाषा और धर्म फूले–फले। यहाँ की वैशाली को विश्व के प्रथम गणराज्य होने का सौभाग्य प्राप्त है। 544 ई.पू. में बिम्बिसार द्वारा हर्यक वंश की स्थापना के बाद पाल वंश के शासकों ने बिहार के ऊपर 12वीं सदी तक राज किया। लेकिन इसके बाद विदेशी हमलावरों ने इसके सुनहरे अस्तित्व को लहूलुहान करना शुरू कर दिया। पहले तुर्क शासक आये, फिर लोदी और उसके बाद आये अफगानी। लेकिन आगे चलकर सूफी–संतों की एक ऐसी समन्वित परम्परा विकसित हुई, जो आज तक चली आ रही है, और जिसके परिणामस्वरूप बिहार की धरती की तरफ दुबारा किसी ने आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं की।

गाँधी जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक आन्दोलन की शुरूआत के लिए बिहार प्रदेश को ही चुना। 1917 में गाँधीजी चम्पारण आए और उन्होंने तीन–कठिया नील व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग यहीं से किया। जैसे–जैसे आन्दोलन का कारवाँ बनता गया, वैसे–वैसे इसमें सभी धर्मों और समाजों के लोग जुड़ते गये। फिर देश आजाद हुआ और प्रथम राष्ट्रपति के रूप में बिहार के ही डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने शपथ ग्रहण किया।

इसके बाद से बिहार ने अनेक उतार–चढ़ाव देखे, अपने को बनते–बिगड़ते देखा और एक समय ऐसा भी आया जब बिहार के नवनिर्माण के लिये 72 साल की उम्र में लोक नायक जय प्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति की शुरुआत कर, पूरे देश की राजनीति को एक नयी दिशा दी। बिहार विभाजन के बाद इस प्रदेश के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडराने लगे थे। लगा कि इस राज्य को उठ कर खड़ा होने में काफी वक्त लग जायेगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। आज भी यहाँ कृषि, पशुपालन और घरेलू उद्योग हैं, पर्याप्त जल–भंडार हैं, कहलगाँव और बरौनी जैसे सुपर थर्मल पावर प्लांट हैं, कोशी और भैंसालोटन जैसे हाइड्रल प्रोजेक्ट हैं, साथ ही शिक्षित मानव संसाधन हैं।

यहाँ की इतनी समृद्धि विरासत है, मेधा है, संसाधन हैं, सब कुछ है.....इतना है कि बांट कर भी खाली न हो, फिर भी इसके कुछ बच्चे भटक गये हैं.....उनके रास्ते गलत हो गये हैं.....उनकी मंजिल गुम हो गयी है। जरूरत है उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने की, उनके भटके कदमों को बांधने की। 'अपनी कथा कहो बिहार' नाटक के माध्यम से बिहार की विरासत की पहचान और आने वाली चुनौतियों की ओर इशारा किया गया है। इसमें इस प्रदेश के तमाम लोगों की कोशिशों और उनकी सहभगिता का आह्वान है जिससे बिहार आगे बढ़ सकता है। ❑

प्रशिक्षण कार्यान्वयन शीघ्र

प्रशिक्षण के विषय

1. राजनीति क्या है? इसकी उपयोगिता एवं उद्देश्य क्या है?– 4 क्लास
   (चाणक्य, गाँधी, लोहिया, जयप्रकाश एवं मार्क्स आदि के विचारों को राजनीतिक दृष्टि से अवगत कराना)
2. पंचायत से लेकर लोकसभा तक का गठन, उसके कार्य एवं उपयोगिता– 4 क्लास
3. जन समस्या का उद्‌भेदन और उसका समाधान– 3 क्लास
4. सामाजिक सुरक्षा और उसके आयाम– 2 क्लास
5. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण संगठन– मानवाधिकार आयोग, संयुक्त राष्ट्र संघ आदि– 5 क्लास
6. सरकार के काम-काज के तरीके– यथा – Rules of executive Business, Protocol/Warrent of Government etc.- 5 क्लास
7. परिचय– संविधान, भारतीय दण्ड संहिता, सूचना का अधिकार, पंचायती राज, लोकसभा एवं विधानसभा में सदस्यों का अधिकार आदि। विधायिका एवं संसदीय प्रणाली में प्रश्न एवं उत्तर संबंधी पहलू/ ध्यानाकर्षण/ शून्यकाल/ तारांकित प्रश्न/ अतारांकित प्रश्न/ अल्प सूचित प्रश्न। विभिन्न समितियों के माध्यम से समस्याओं के निदान के पहलू– 5 क्लास
8. चर्चा– भूगोल, शिक्षा, स्वास्थ्य, पत्रकारिता, नाटक आदि– 5 क्लास
9. संवाद– राजनीतिज्ञ/ प्रशासनिक अधिकारी/ पत्रकार/ चिंतक/ उद्यमी– 5 क्लास। 10. कम्प्यूटर ट्रेनिंग– 1 दिन

अवधि:– एक महीना/ कुल- 40 क्लास/ शनिवार-रविवार छुट्टी **Fee = 1000/- per student**

सम्पर्क:– सुनील कुमार सिन्हा (9934064231), प्रमोद कुमार सिंह (9431419356), कुमार शांत रक्षित (9334123150), मदन शर्मा (9006631019), आर.यू. सिंह (49431021508), प्रो. बी.एन. सिंह (9431024979), श्यामजी सहाय (9905394141), शशि शर्मा (9334100606)

Scanned by CamScanner

शताब्दी वर्ष : बिहार की रंग गतिविधियाँ

—डॉ. अशोक प्रियदर्शी

सन् 2012 ई.। बिहार प्रदेश का शताब्दी वर्ष। इस शताब्दी वर्ष में बिहार को अनेक कंटीले–पथरीले रास्ते से गुजरना पड़ा। कंटीले रास्ते तय करने के पश्चात् ही किसी निर्धारित लक्ष्य तक सफलतापूर्वक पहुँचा जा सकता है। यही हुआ भीं। गोरी सरकार का अत्याचार बिहार प्रदेश में भी व्याप्त था। निलहे किसानों पर अत्याचार का आलम शीर्ष पर था। राजकुमार शुक्ल के अनुरोध पर महात्मा गाँधी का चम्पारण आगमन और निलहे किसानों को गोरी सरकार के अत्याचार से मुक्त करने का उनका संकल्प रंग लाया। उस समय हर जाति–हर वर्ग, हर प्रदेश का एक ही लक्ष्य था– 'गोरी सरकार के चंगुल से भारत माँ को मुक्ति मिले। एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् 15 अगस्त 1947 ई.। अपने देश का तिरंगा लाल किला के प्राचीर पर मुस्कुराने लगा था। बिहार के हर सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज लहराने लगा। देश को पहला राष्ट्रपति दिया इसी गौरवशाली बिहार ने। देश को राष्ट्रकवि प्रदान किया इस पावन बिहार ने। देश को महान् लोक नाटककार (भिखारी ठाकुर) दिया इस बिहार ने। देश में सत्ता परिवर्त्तन का बिगुल भी फूंका (1974) इस बिहार ने। आज इस प्रदेश के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में हम सभी बिहारवासी इस ऐतिहासिक–पौराणिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थल को सादर नमन् करते हैं।

पंचम वेद के नाम से विभूषित नाट्य–विधा का इतिहास भी बिहार प्रदेश का लगभग सौ वर्षों का हो चुका है। हिन्दी नाटक समाज, पुण्यार्क कला निकेतन, किरण कला केन्द्र (पंडारक), तरूण भवतारिणी नाट्य समिति (सासाराम), बिहारी क्लब और मगध आर्टिस्ट्स अथवा मगध कलाकार (बख्तियारपुर), हिन्दुस्तान मित्र मंडल नाट्य समिति, गोलमुरी (जमशेदपुर), यंग मेन्स ड्रामेटिक क्लब, आर्ट एण्ड आर्टिस्ट, नील कमल कला मंदिर, बिहार आर्ट थियेटर, चतुरंग, कला–जागरण, कला संगम, प्रांगण (पटना) आदि नाट्य संस्थाएं बिहार के इस शताब्दी वर्ष के कुछ महत्वपूर्ण कीर्तिमान नाम रहे हैं जिनके द्वारा प्रदर्शित नाटक मील के पत्थर रहे हैं। कई ऐसे नाट्य समारोहों का भी आयोजन किया जाता रहा जिनसे बिहार के रंगकर्मी दूसरे प्रदशों की नाट्य गतिविधियों से परिचित होते रहे और लाभान्वित होते रहे। इनके अलावा भी नाट्य गतिविधियों में बेगुसराय, भागलपुर, पूर्णियां, दरभंगा, आरा, कोईलवर, मोकामा, बक्सर आदि स्थानों में क्रियाशील अन्य अव्यावसायिक नाट्य संस्थाओं की गतिविधियों से इन्कार नहीं किया जा सकता। उपरोक्त नाट्य संस्थाओं में कई नाट्य संस्थाएं या तो बन्द हो गयी हैं अथवा उनकी गतिशीलता में थोड़ी कमी आयी है। इसका कारण कुछ भी हो सकता है।

जब बिहार–बंगाल और उड़ीसा मिलाकर एक राज्य स्थापित था तब बिहार में पारसी नाटकों के प्रदर्शन का प्रचलन था। हाँ, धीमी गति से बंगला नाटक भी कालान्तर में प्रदर्शित किये जाने लगे। लेकिन पारसी शैली के नाटकों का बाहुल्य था। इससे पूर्व कोई अन्य भाषा में नाटकों का प्रदर्शन बिहार में होता हो, ऐसे कोई प्रमाण नहीं मिलते। डी.एल. राय, रणधीर साहित्यालंकार, आगा हश्र कश्मीरी, राधेश्याम कथावाचक, रूप नारायण पाण्डेय, लोकनाथ द्विवेदी आदि नाटककारों के नाटक हिन्दी में अनूदित कर मंचन किये जाते थे। उस समय के रंगकर्मी रहे हैं–प्यारे मोहन सहाय, ओनिल डे, अनिल कुमार मुखर्जी, आशीष घोषाल, कमलेश्वर प्रसाद कमलेश, वीरेन सेन, परेश सिन्हा, अजीत गांगुली, आर.पी. तरुण, दुर्गा देवी, जगन्नाथ शुक्ल, डॉ. चतुर्भुज, रामेश्वर सिंह काश्यप, रमणी रमण, मदान साहब, गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, भगवान सिन्हा, महावीर सिंह आजाद, कमलेश्वरी प्र. वर्मा, गोपाल शरण, मोहम्मद नसीम, भगवान प्रसाद, सुमन कुमार आदि। इन रंगकर्मियों के अभिनय और नाटक के प्रति इनके पूर्ण समर्पण को आज भी लोग स्मरण करते हैं।

उस युग में बिहार में रंगमंच के अलावा मनोरंजन के कोई अन्य साधन नहीं थे। प्रदर्शित होने वाले पारसी नाटकों के परदे काफी भड़कीले होते थे। जंगल, महल, किला, और बड़े शहरों की सड़कें रंगीन पर्दे पर उकेरे होते थे। नाटकों की घटनाओं से उन रंग–बिरंगे पर्दों का कोई साम्य नहीं होता था। अकबर और राणा प्रताप के युद्ध के दृश्य भी बड़े शहरों की सड़कों के बने परदे पर दिखाये जाते थे। आयोजक इस बात का विशेष ख्याल रखता था कि एक दृश्य के बाद नाटक का दूसरा दृश्य, दूसरे रंगे परदे पर हों। नाटक देखने के लिए दूर–दूर गाँव से खाना आदि खाकर बड़े इत्मिनान से हाथ में लालटेन और अपनी सुरक्षा के लिए लम्बे डंडे लेकर एक समूह बनाकर लोग एक जगह एकत्रित होते थे। आयोजकों द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि हमारे ये सुधी दर्शक ठंढ आदि में आधी रात में घर लौटने के लिए मजबूर न हों। इसी कारण रात्रि दस बजे से नाटक प्रारम्भ किया जाता था जो सुबह तक चलता था। मूल नाटक से अलग हटकर एक अलग से हास्य सामाजिक नाटक का भी प्रदर्शन साथ–साथ चलता था। मूल नाटक से प्रहसन नाटक का कोई मिलान नहीं होता था। नाटकों के विषय मुख्यतः ऐतिहासिक–पौराणिक अथवा देशभक्ति से परिपूर्ण होते थे।

आज की तरह उस समय बने–बनाये हॉल नहीं मिलते थे। मंचन के लिए बांस–बल्ले लगाकर चौकी के सहारे मंच का निर्माण किया जाता था। दर्शकों के सामने का पर्दा दाहिने–बांये दिशा में नहीं खुलकर नीचे से उपर की ओर लिपटाये जाते थे। मंचन से पूर्व श्रद्धापूर्वक स्टेज पूजा की जाती थी और रंगकर्मी अपने से वरिष्ठ रंगकर्मियों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करते थे। आरती उतारी जाती थी। आरती लेकर बच्चे

Scanned by CamScanner

दर्शकों के बीच भी घूम जाते थे जिससे उन्हें कुछ पैसे भी मिल जाते थे। अभिनेताओं के संवाद काफी उंची आवाज में होती थी। माइक्रोफोन का प्रचलन उस समय नहीं था। लेकिन कलाकार अपने संवाद दर्शकों के पीछे तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहते थे। अभिनय के दौरान जब कलाकारों के संवाद पर तालियाँ बजती थी और 'वन्स मोर' की ध्वनि होती थी तब कलाकार अपने बोले गये संवाद को पुनः दुहराकर दोबारा ताली बटोरने का प्रयास करते थे। ऐसा भी संभव होता था कि अगर कलाकार के डेथ सीन पर दर्शकों की वाहवाही होती थी तब कलाकार अपने अभिनय में मरने के बाद पुनः उठ खड़ा होता था और बोले गये संवाद को दुहराकर दूसरी बार मरने का अभिनय करता था।

मैं स्मरण करता हूँ अपने बालपन के दिनों का। सन् 1952 ई. में बख्तियारपुर में स्थापित मगध कलाकार के नाटकों का मैं साक्षी रहा हूँ। बिहारी क्लब के बाद इस संस्था का जन्म हुआ था। डॉ. चतुर्भुज इस संस्था के संस्थापक–निर्देशक थे। मगध कलाकार के अधिकांश कलाकार रेल सेवा के कर्मचारी थे। स्टेज पर पेट्रोमैक्स जलाकर नाटक किया जाता था। संस्था का प्रयास होता था कि नाटक के लिए उसी स्थल का चयन किया जाय जहाँ से रेलवे लाईन गुजरती हो। मैं देखता था कि रात्रि दस बजे तक अपने प्रयास से किसी ट्रेन का इंजन स्टेज के पीछे मंगवा लिया जाता था। नाट्य मंचन के दौरान उसी ट्रेन से लाईन लेकर मंच पर प्रकाश किया जाता था। दूसरे स्थलों पर मंचन करने में फिर वही पेट्रोमैक्स का सहारा होता था।

उस युग में महिलाओं का प्रवेश रंगमंच पर नहीं हुआ था। पुरुषों द्वारा ही महिला चरित्र की भूमिका करायी जाती थी। पात्रों के ड्रेस काफी भड़कीले होते थे। अभी हाल में डॉ. चतुर्भुज लिखित एक पुस्तक 'मेरी रंगयात्रा' आत्मकथा के रूप में पाठकों के सामने आयी है। उन्होंने अपनी आत्म कथा के माध्यम से इस पुस्तक में उल्लेख किया है कि नाटक और रंगमंच सदैव उनकी प्रतिछाया की तरह संग–संग चलता रहा। जब भी उन्होंने कहीं निराशा का अनुभव किया, नाटक और रंगमंच हमेशा उनका संबल बना रहा। अंग्रेजों द्वारा संचालित कैलेन्डर कम्पनी में सेवा करने के पश्चात उन्होंने रेल सेवा की, फिर नव नालन्दा महाविहार में आकर अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध भिक्षु जगदीश कश्यप के चरणों के निकट रह कर बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। राहुल सांकृत्यायन, भिक्षु धर्मरत्न जी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन जैसे विद्वत लोगों का सान्निध्य प्राप्त किया। आकाशवाणी की सेवा की। लेकिन वे अपने नाट्य लेखन, अभिनय, निर्देशन, को कभी भूले नहीं। सदैव वे उसके साथ बने रहे। पढ़ने का शौक उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। बिना किसी कॉलेज में अध्ययन किए डॉ. चतुर्भुज ने प्राईवेट से आई.ए., बी.ए. और एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। आकाशवाणी से सेवा निवृति के दस वर्षो बाद उन्होंने तब पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की जब कि उनके शिष्य पूर्व में ही उनकी रचनाओं पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से एम.फिल. और पी–एच.डी. की डिग्री प्राप्त कर चुके थे। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक उन्होंने नाटक को रोजी–रोटी से जोड़ने का प्रयास किया। उन्हीं के प्रयास से ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर स्वतंत्र विषय के रूप में 'नाट्यशास्त्र' की पढ़ाई प्रारम्भ करायी। ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज की जयन्ती (15 जनवरी) के अवसर पर हम उन्हें सादर नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

बिहार प्रदेश के शताब्दी वर्ष के अवसर पर हम मगध कलाकार के कुछ चर्चित अभिनेता–अभिनेत्रियों का स्मरण करना नहीं भूलेंगे जिन्होंने रंगकर्म में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चर्चित कलाकारों में हैं–जगन्नाथ शुक्ल, मोहम्मद युनुस, कामेश्वर शर्मा, भागवत प्रसाद श्रीवास्तव, भगवान साहु, मकसूद खाँ, भगवान प्रसाद, महेन्द्र कौर सूरि, नरेन्द्र कौर सूरि, हरवंश कौर सूरि, कुमकुम गायत्री, डॉ. चतुर्भुज, महावीर सिंह आजाद, रमाकान्त सिंह, अनन्त कुमार, चक्रधर, राणा राजेन्द्र, जयनन्दन प्रसाद सिन्हा, कन्हैया लाल, भुवनेश्वर, पी.डी. वर्मा, हंसराज सिंह, नरेन्द्र सिंह चौहान, शीला डायसन, दुर्गा देवी, ज्योतिर्मयी श्रीवास्तव, तनुजा, विनोद कुमार सिन्हा, जगदीश प्रसाद सिन्हा, श्याम सुन्दर आदि। इन रंगकर्मियों में से अधिकांश रंगकर्मी अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन उनके रोचक अनुभव हमारा मार्ग दर्शक बन सकता है।

आज बिहार का रंगमंच काफी समृद्ध हो चुका है। मंचन के दौरान आधुनिक रंग–तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। भगवान सिन्हा, चित्रगुप्त, श्याम सागर, विन्ध्यवासिनी देवी, रामायण तिवारी, जैसे कलाकारों का जन्म आज भी बिहार की इस पावन धरती पर हो रहा है। आज की युवा पीढ़ी को सांचे में तराश कर उन्हें मनोज बाजपेयी, शत्रुघ्न सिन्हा, प्रकाश झा जैसा व्यक्तित्व बनाया जा सकता है। उन युवाओं की कला को पहचानने की जरूरत है, अवसर प्रदान करने की जरूरत है, करीने से उनकी कला को निखारने की जरूरत है। राज्य सरकार को चाहिए कि उनकी कला को पहचान दिलाने के लिए यहां एक नाट्य कला प्रशिक्षणालय की व्यवस्था करे, रंगमंच और नाटक को शिक्षा के विषय में जोड़े ताकि यहां की उपजी पौध राष्ट्रीय स्तर पर अपने बिहार प्रदेश को गौरवान्वित कर सके।

क्वाटर नं. 106, रोड नं.–06,
श्रीकृष्ण नगर, पटना–800001
9334525657 (मो.)

Scanned by CamScanner

यात्रा...छोटी सी...

आशीष कुमार मिश्र, रंगकर्मी एवं पत्रकार

आशीष कुमार मिश्र, उम्र 38, पिता- श्री बैद्यनाथ मिश्र, माता- श्रीमती वीणा देवी। मूल रूप से मैथिल। मधुबनी जिला के परौल गांव निवासी। छुटपन से ही पटना निवास। टी.के. घोष के छात्र के रूप में अभिनय की शुरुआत। 1983 में विशाल नाट्य मंच की स्थापना। संस्थापक सदस्य फिर सचिव के रूप में वरीय रंगकर्मी सहजानंद की प्रेरणा से सक्रिय हुए। प्रेमचंद रंगशाला मुक्ति आंदोलन में सहभागिता।

इंटरमीडिएट पटना इंजीनियरिंग कॉलेज से पास करने के दौरान ही 40 कलाकारों को लेकर 'पूस की रात' का निर्देशन। दुमका में आदिवासियों के बीच साक्षरता मुहिम में 'पोस्टर' नाटक का निर्देशन। स्नातक में पटना कॉलेज पहुंचते ही विभिन्न अखबारों, पत्रिकाओं में बतौर कला समीक्षक लेखन की शुरुआत। पटना विश्वविद्यालय सांस्कृतिक टीम का नेतृत्व। कई गोल्ड मेडल, अभिनय, निर्देशन में। इसी उम्र में नाटक 'हीरो की तलाश' का लेखन-निर्देशन।

हिन्दुस्तान, आर्यावर्त, प्रभात खबर में स्वतंत्र पत्रकार की हैसियत से कला संस्कृति, समाज, साहित्य और मानवीय कहानियों का लेखन। 1998 में विकास झा के नेतृत्व में 'राष्ट्रीय प्रसंग' में उप मुख्य संपादक के रूप में पत्रकारिता बनी आजीविका। 2000 के बाद हिन्दुस्तान की विधिवत नौकरी। संवाद सूत्र, हिन्दुस्तान प्रतिनिधि, सिटी चीफ होते हुए फिलवक्त हिन्दुस्तान ब्यूरो में प्रधान संवाददाता। हिन्दुस्तान में नेपत्थ्य, पहचान, शब्द-साक्षी, बिहार : आज की कविताएँ, बिहार गाथा : स्वतंत्रता संग्राम में बिहार, खस्ताहाल अकादमियाँ, गंगायात्रा समेत एक दर्जन कॉलमों की शृंखलाएँ। सैकड़ों इंटरव्यूज।

शिवमूर्ति की चर्चित कहानी तिरिया-चरित्तर का नाट्यानुवाद और कई राज्यों में मंचन। मैथिली में 'सिंहासन खाली है' का अनुवाद। हीरो की तलाश, एक सवैया सवा, जागत नींद न कीजे, हिरण हिरणी, योजना पिकनिक की समेत एक दर्जन नाटकों का लेखन। दूरदर्शन के लिए तलाश, सुर संगम, मुड़-मुड़ के न देख समेत आधा दर्जन सीरियलों का लेखन। वर्तमान में आकाशवाणी के 15 स्टेशनों से 104 कड़ी के नाटक 'पल' का प्रसारण हर रविवार को। राज्य के 38 अक्षरदूतों की उपलब्धियों की कहानी पर आधारित पुस्तक 'सपनों को लगे पंख' के लेखक। अगले माह राज्य के वृद्धों की कहानी पर आधारित पुस्तक 'हम हैं बिहार' (शतक के साक्षी) का प्रकाशन।

अब तक सतीश आनंद, संजय उपाध्याय, सहजानंद, धनंजय नारायण सिन्हा, अरविंद रंजन दास, कौशल कुमार दास, विनीत झा, प्रशांत कांत, राधाकृष्ण दत्त, विजय कुमार के निर्देशन में देश के कई भागों में 100 से अधिक नाटकों में अभिनय। एनएसडी समेत एक दर्जन नाट्य कार्यशालाओं में भागीदारी।

पूस की रात, भारत-दुर्दशा, तिरिया-चरित्तर, अंधेर नगरी, इंकलाब जिंदाबाद, जनता पागल हो गयी है, कुत्ते, हीरो की तलाश, सिंहासन खाली है, संदेश, जॉब वेकेन्सी, राजा का बाजा समेत दो दर्जन नाटकों का निर्देशन।

सराय की मालकिन, आतंक (पंडित त्रिलोचन झा), 92 में मिस बिहार कांटेस्ट, शॉन मैजिक शो, फैशन शो, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहों की लाइट डिजाइनिंग। 1995 में नाट्य संस्था 'रंगकर्म' की स्थापना। रेडियो के बी हाई ड्रामा आर्टिस्ट। दूरदर्शन के ए ग्रेड एंकर। दैनिक हिन्दुस्तान में प्रधान संवाददाता। ❑

डॉ. चतुर्भुज लिखित आत्म-कथा
'मेरी रंगयात्रा',

जिसमें उनके जीवन के छुए-अनछुए
पहलुओं की झलक संकलित है,
अब पाठकों के समक्ष है।

सम्पर्क करें- 011-23270889
011-23272145
09811271465

Scanned by CamScanner

उर्वशी

8 फरवरी, (बुधवार)

लेखक–डॉ. चतुर्भुज
प्रस्तुति–बिहार आर्ट थियेटर, पटना

निर्देशक– उपेन्द्र कुमार
समर्पण –स्व. जनार्दन राय

कथासार

भारतवर्ष में अनेक धर्म विद्यमान हैं। सभी धर्मों ने अपने अपने साहित्य में मानव कल्याण और सुखमय जीवन के उपदेश संकलित हैं। गीता–रामायण–पुराण में भी इन संदेशों का उल्लेख किया गया है। भारतीय पुराण में उर्वशी की कथा का उल्लेख किया गया है। ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज ने उर्वशी चरित्र पर एक मंचीय नाट्य रचना की है। उर्वशी नाटक में प्रतिष्ठानपुर के महाराज पुरूरवा और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी की प्रेम–कथा वर्णित है। आगे का संदर्भ हम नाटक के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

उपेन्द्र कुमार, निर्देशक

उपेन्द्र कुमार एक युवा अभिनेता, निर्देशक और लाईट मैन, और मेकअप मैंन हैं। बी.कॉम तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद इन्होंने रंगक्षेत्र में अपना कदम रखा। उत्साह इतना है कि ऐक्टिंग, नाट्य निर्देशन, प्रकाश व्यवस्था के साथ मेक–अप करने के लिए भी वे आगे बढ़ जाते हैं। सन् 1990 से श्री उपेन्द्र कुमार बिहार आर्ट थियेटर से जुड़ कर अपने रंगमंच की भूख को शान्त करने में लगे हैं। अपने निर्देशन में इन्होंने बोलता गदहा, लाख की नाक, खो–खो भों–भों, अन्धेर नगरी, त हम कुंवारे रहें, चिड़ियों का बंगला, आज का दानव, मौत का सौदागर, बड़े घर की बेटी, हेड मास्टर ऑफ नर्तकी, यमलोक की टक्कर मंत्री से, दहेज का दानव, आदि। आज आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ–उर्वशी नाटक। कई नाटकों में श्री उपेन्द्र कुमार ने ऐक्टिंग भी की है। अभिनेता के रूप में उनके प्रमुख नाटक हैं–आचार्य द्रोण, काबुलीवाला और मिनी (बंगला), हम जीना चाहते हैं, अंधा कानून, मौत का सौदागर, त हम कुंवारे रहें, औरत का दर्द और बुद्धवाद, संघमित्रा का भूत भविष्य, कालेर पाला (बंगला) आदि। लाईट टेक्नीशियन और साउण्ड टेक्नीशियन में विशेषज्ञता प्राप्त करने के कारण श्री उपेन्द्र कुमार को कलाश्री सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

पात्र–परिचय

1.	उर्वशी	: उज्जवला गांगुली
2.	चित्रलेखा	: साक्षी प्रिया
3.	सुकन्या	: रंजिता जयसवाल
4.	मेनका/रम्भा	: शांति प्रिया
5.	इला	: राखी वर्मा
6.	बुध	: विष्णु दे. कु. विशु
7.	रानी देवी	: नुपुर चकवर्ती
8.	पुरूरवा	: उमेश कुमार श्रीवास्तव
9.	देवराज इन्द्र	: मृत्युंजय शर्मा
10.	भरतमुनि	: प्रवीण सप्पु
11.	केशि दैत्य	: संदीप कुमार
12.	वृहस्पति	: संजय भट्ट
13.	मंत्री	: अभिषेक
14.	मातली	: युवराज
15.	आयु	: श्रेय चकवर्ती
16.	वरुण देव	: कृष्ण मोहन
17.	पवन देव	: प्रवीण कुमार
18.	सेनापति	: राजन कुमार सिंह
19.	प्रहरी–1 और 2	: अनन्त, अमर
20.	दैत्य–1,2,3	: पिन्टु, अमित, सतवीर
21.	दासी	: नेहा
22.		

नेपथ्य में

प्रकाश संचालन	:	राजकुमार शर्मा, सौरभ सुमन
ध्वनि	:	उपेन्द्र कुमार, अमरचन्द्र सोनू
मंच व्यवस्था	:	संजय, राजेश कुमार, सर्फुद्दीन, हीरा मिस्त्री,
नृत्य निर्देशन	:	प्रेम शंकर
रूप–सज्जा	:	सुनील, अशोक घोष
वस्त्र–विन्यास	:	सुजीत कुमार

प्रस्तुति नियंत्रक	:	अजित गांगुली
प्रकाश परिकल्पना	:	प्रदीप गांगुली
प्रस्तुति प्रभारी	:	आर.पी. तरुण

Scanned by CamScanner

अपनी कथा कहो बिहार

09 फरवरी, 2012 (वृहस्पतिवार)

लेखक : डॉ. किशोर सिन्हा
प्रस्तुति : पंचकोसी सांस्कृतिक मंच, सहरसा

निर्देशकः अमित कुमार जयजय
समर्पितः स्व. देवानन्द

एक परिचय

'अपनी कथा कहो बिहार' नाटक के युवा लेखक डॉ. किशोर सिन्हा आकांशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी के पद पर कार्यरत हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं– सामयिक हिन्दी निबन्ध, रेकी, विरासत (रेडियो रूपक संग्रह), हिन्दी की आंचलिक कहानी : परम्परा और प्रयोग, रेडियो प्रसारण की नयी तकनीक, नारी! तुम केवल श्रद्धा हो आदि। प्रकाशन हेतु कई पुस्तकें प्रेस में हैं। अभिनय, निर्देशन के साथ डॉ. सिन्हा नाटकों में पार्श्व संगीत को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। इसी कारण उन्होंने पीरअली, आषाढ़ का एक दिन, बंद कमरे की आत्मा, चारूलता आदि नाटकों को संगीत में बांध कर सजाया। साहित्य सेवा और रंगमंच की सेवा के कारण इन्हें कई संस्थाओं की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है। अपनी कथा कहो बिहार के माध्यम से लेखक आज की युवा पीढ़ी को बताना चाहते हैं कि हमारा बिहार प्राचीन काल से ही गौरवशाली रहा है। बिहार विभाजन के पश्चात भी इसकी पहचान में कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं आया, पूर्ववत बना रहा। यहाँ का हर वर्ग अपने प्रदेश को शिखर तक सम्मान दिलाने के लिए कृत–संकल्प है। लोगों के हौसले आज भी बुलन्द हैं। नदी की बेगवती धारा को विपरीत दिशा में प्रवाहमान करने की क्षमता है।

अमित कुमार जयजय, निर्देशक

शिवपुरी, सहरसा निवासी अमित कुमार जयजय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली से 2004 में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली एवं रेनेसांस, गया के सहयोग से आयोजित 30 दिवसीय डिजाइन एवं टेक्नीकल वर्कशाप में प्रशिक्षण प्राप्त। बतौर लेखक एवं निर्देशक नाटक चकई'क'चकधूम बिहार से प्रथम स्थान प्राप्त करके 14वें राष्ट्रीय युवा उत्सव 2009 अमृतसर में भागीदारी। तोता–मैना और रावण का सफल निर्देशन। अब तक 20 पूर्णकालिक नाटक (हिन्दी, मैथिली, और अंगिका) में अभिनय। 24वें पाटलिपुत्र नाट्य महोत्सव में परमानन्द पाण्डेय अखिल भारतीय नाट्य शिल्प सम्मान–2009 में, डॉ. चतुर्भुज नाटककार एवं रंग निर्देशक सम्मान–2010में।

अपनी कथा कहो बिहार

पात्र-परिचय

शिवानी कुमारी, विकास भारती, नीतिन कुमार पोद्दार, मणीष कुमार पाठक, सोनू कुमार, श्वेता कुमारी, सुबोध कुमार, अजय कुमार, श्याम किशोर कामत, चन्दन कुमार, शहंशाह

मंच पार्श्व

सेट निर्माण–	विकास भारती, मनीष कुमार पाठक
रूप–सज्जा–	शिवानी कुमारी, खुशबू कुमारी,
वस्त्र परिकल्पना–	शिवानी कुमारी, श्वेता कुमारी,
रंग सामग्री–	नीतिन कुमार पोद्दार, सोनू कुमार
ड्रेस डिजायन–	शहंशाह, शिवानी कुमारी
मंच सज्जा–	मनीष कुमार पाठक, सुबोध कुमार
प्रोपर्टी इन्चार्ज–	विकास भारती, नीतिन कुमार पोद्दरी, शिवानी कुमारी, चंदन कुमार, अजय कुमार, सोनू कुमार, श्वेता कुमारी
फोटोग्राफी–	नीरज कुमार
विडियोग्राफी–	संतोष कुमार मिश्रा
सहयोग–	अभय कुमार मनोज, संजीव कुमार सिंह, सुधांशु शेखर, सुमित कुमार, हिमांशु कुमार सिंह, संतोष कुमार मिश्रा, नरेन्द्र कुमार; टुनटुन, मुकेश कुमार झा, जीतेन्द्र अमर, रूपम श्री, खुश्बू।

Scanned by CamScanner

हारा हुआ सिकन्दर

09 फरवरी, 2012

लेखक : जगदीश चावला
प्रस्तुति : पुण्यार्क कला निकेतन

निर्देशक : अजय कुमार
समर्पित : स्व. बलराम लाल

कथासार

विश्व–विजेता बनने का ख्वाब लिए यूनान का सम्राट और अरस्तु का शिष्य एलेक्जेन्उर निकल पड़ा अपने देश से। एक–एक देश पर अपना ध्वज लहराता हुआ वह तूफान आगे बढ़ता जा रहा है। विजय का दम्भ लिए वह सिन्धु नदी तक आ गया। भारतवर्ष का कण–कण वीर प्रसविनी रहा है इसकी जानकारी एलेक्जेन्डर अर्थात् सिकन्दर को नहीं थी। सामना हुआ वृद्ध वीर योद्धा पोरस से। सिन्धु के तट से ही सिकन्दर को वापस लौटाने का प्रण कर लिया था इस मातृभूमि के एक–एक लाल ने। चाणक्य और चन्द्रगुप्त की सूझ–बूझ ने भी इस कार्य में योगदान दिया। स्थिति ऐसी बन गयी कि सिकन्दर के अपने ही सैनिकों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। कैद होने के बाद भी पोरस की वीरता के सामने सिकन्दर को झुकना पड़ा। उसे यह अहसास हो गया कि भारतवर्ष की सीमा पर जब ऐसे वीर मिले हैं तब आगे तो विशालकाय प्रदेश मगध का क्षेत्र है। वहाँ टिक पाना और दुष्कर हो जायेगा। अन्त में लाचार होकर अपनी सेना के साथ सिकन्दर को वापस लौटना पड़ा।

अजय कुमार, निर्देशक

हिन्दी रंगमंच के क्षेत्र में पण्डारक (बाढ़) का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ कई नाट्य संस्थाएं दुर्गापूजा, सरस्वती पूजा आदि अवसरों पर नाटकों का मंचन करती रही है। हिन्दी नाटक समाज यहाँ का सबसे पुराना मंच रहा है। चौधरी राम प्रसाद शर्मा, कृष्णनन्दन शर्मा, जानकी नन्दन सिंह, नुनू लाल बाबू इस संस्था के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व रहे हैं। आस–पास के क्षेत्रों में दूसरी अन्य संस्थाएं, हिन्दी नाटक समाज की प्रेरणा से ही उभर कर सामने आयी। पुण्यार्क कला निकेतन की स्थापना 1977 में हुई। युवा रंगकर्मी और निर्देशक अजय कुमार इसके स्थापना काल से ही अपनी रंगयात्रा करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। 'अशोक का शस्त्र त्याग' नाटक से अपनी रंगयात्रा प्रारम्भ करने वाले अजय कुमार ने अपने निर्देशन में अमली, जाँच पड़ताल, हम कहाँ जा रहे हैं, यहूदी की लड़की, कलिंग विजय आदि नाटक प्रस्तुत किया। आर्थिक सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं की परवाह किए बगैर श्री कुमार संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। प्रथम एवं द्वितीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में इन्होंने क्रमशः कलिंग विजय और माटी हिन्दुस्तान की नाटकों की प्रस्तुति कर अपने निर्देशकीय क्षमता को प्रमाणित किया है। कला–जागरण और मगध कलाकार परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक शुभकामना।

पात्र–परिचय

सिकन्दर	:	विजय आनन्द
पोरस	:	रवि शंकर
आम्भी देव	:	विकास कुमार
सैल्युकस	:	राकेश कुमार डब्लू
युवराज	:	श्याम सुन्दर
अरस्तु	:	दिनेश नारायण मिश्र
रूखसाना	:	शबाना आफरीन
वंदना	:	अंललि शर्मा
एन्टिगोनस	:	कन्हैया कुमार
अलागोर	:	अजय कुमार
कविराज	:	गिरधर गोपाल
द्वारपाल	:	पप्पु माल्या
अन्य	:	राहुल कुमार अशोक कुमार

नेपथ्य में

रूप–सज्जा	:	डब्लु आनन्द
वस्त्र–विन्यास	:	दिनेश, अशोक
सेट निर्माण	:	श्याम सुन्दर
प्रकाश–व्यवस्था	:	अभिषेक आनन्द
प्रस्तुति नियंत्रक	:	मनोज कुमार सिंह

Scanned by CamScanner

कसम (Wasak)

दिनांक : 10 फरवरी, 2012 (शुक्रवार)

लेखक : Jugolchandra Sharma
प्रस्तुति : Institution for Traditional Arts & Culture

निर्देशक : S. Birendra Singh
समर्पित : Late Badal Sarkar

STORY OF THE PLAY

This is the real historical events occur during the period of Manipuri King Garibaniwaj in the year, 1709-1748. In the story Thambal a beautiful woman wife of Irom Chaoba who was a hard worker living from hand to mouth returning back home from the area after normal worked, on the way King Garibaniwaj met Thambal face to face looking heartedly by the King while returning back from hunting of the day. King Garibaniwaj loved eagerly Thambal took decision to make couple with Thambal. At her residence Thambal narrated the suspected felings which may occur the unexpected events to her husband Chaoba. An announcement ordered by the King came those females who resides in the area, belongs ageed between 13th to 30th years should be attended at ehe meadow field of the Palace Compound in the early morning on the next day for choosing of queen. Anybody who are not attended the same will get punishment as ordered of the King. On the next day of morning females of the area are turn-up crowded in the meadow field but Thambal was absented as witness by the King, follow up action came in the house of Thambal direct for picking up Thambal, Meanwhile Chaoba was not there in the house going out for searching of livelihood. King Garibaniwaj try to caught raid handed Thambal but Thambal denied and shouted to save herse;f. at the very moment Chaoba return back to his house and met the occasion he tried to save his wife Thambal, ill fated Chaoba defeated at the spot stabbed by the followers of the King to deat. Poor Thambal weeping embraced her husband and promised to take revenge. King Garibaniwaj carried away Thambal and kept under the custody of chanura loishang recognized as the 3rd queen renamed as Gomati. But Thambal could not forget her husband Chaoba in any moment thinking for revenge in all the times.

In course of time, Queen Gomati got two sons the first one named as Jitsai, the second one named as Tolentomba. By keeping words of the King laid down in the former, Gomati objected the hadling over of throne to Shyamsai who is the eldest son of the king. As Thambal claimed his son Jitsai to be handed over the throne as to achieve promise No.1 as Wasak. For instance Jitsai taking over the charge of King as sacrificed by Shyamsai who is compel to govern his father, Garibaniwaj by circumstance to go to Burma arriving on the bank of Ningthi River Tonphang Hiden to took rest for some few minutes. Shyamsai going out for searching foodstuffs for his tired father Garibaniwaj. Tolentomba also following their journey far behind as per instruction by his mother Queen Gomati strictly insisted to murder Garibaniwaj. Tolentomba coming up soon stabbed Garibaniwaj to death as to achieve the promise for revenge of his mother's "Wasak".

Shri S. Birendra Singh, Director

Shri S. Birendra Singh Director was born on the 7th March 2946 at Khurai Sajor Leikai, Imphal, Manipur. From the very childhood he started learning, graduated in the year 1968 and serving in the Directorate of Economics & Statistics Govt. of Manipur upto the post of Assistant Director and now he is a pensioner. He was entered in the theatrical line in the year 1969 and onwards a complete 25 year as an artiste, he acted as major role in Drama plays & Street Publicity plays under song & Drama Division, Ministry of Information & Broadcasting, Govt. of India above 300 plays he has acted and Directes. Notable plays under his direction & supervision has staged & participated in the National level and International level too. Many prestigious prizes has won from participation of National level.

Scanned by CamScanner

Shri S. Birendra Singh has completed "Avant Grade" course & successfully graduation in National Theater studies. He has won prestigious awards viz. Dr. Ambedkar National Fellowship Awards, Natya Ratna (National), Natya Bibhushan(National).

Shri Birendra Singh was working as Secretary Sangeet Kala Sangam, Imphal more than 10 years andnow he is working as Secretary Cum Director in the Institution for Traditional Arts & Culture, Manipur till date.

CASTS

1.	Garibaniwaj King	:	S. Birendra Singh
2.	Bormantri	:	Ng. Sanajaoba Singh
3.	Khunja/Oja Amuba	:	S. Birendra Singh
4.	Chaoba/Shaymsai	:	Y. Romeo/Pal Singh
5.	Jitsai	:	Ch. Debalan Singh
6.	Tolentomba	:	Ch. Debalan Meetei
7.	Khunja	:	S. Sardananda Singh
8.	Thambal/Gomati	:	S. Premlata Devi
9.	Leima	:	S. Thoibisana Devi Senabi/ Khunja
10.	Leima Senabi/Khunja	:	W. Chaoba Devi
11.	Leima Senabi	:	S. Nancy

CREDITS

1. Music Director	:	K. Narendra Singh
2. Music Composer	:	E.Somorjit Singh
3. Director Martial Arts	:	S. Biswajit Singh
4. Light Designer	:	S. Hemamalini
5. Costume Designer	:	S. Chaobi Devi

FREEDOM

(Academy of Art & Craft)

Acting, Anchoring for Radio / Television & stage
News Reading, Writing, Editing for Radio & Television

Music : Hindustani Classical, Light Music, Semi Classical Music
Dance : Classical, Folk, Semi Classical, Western, Regional
Instrument : Tabla, Harmonium, Guitar & others
Makeup, Painting, Crafts, Yoga, Marshal Arts many more.
Special Course on street Play

Freedom : Shree Ram Bhawan Gali, Karbigahiya, New Bus Stand Road
Near New Jakkanpur Thana, Shree Raj Trust Hospital, Patna-1
Mob. : 9934035237, 9308129797

Classes Starts from April-2012

Admission going on...

Scanned by CamScanner

गोपा (नृत्य-नाटिका)

दिनांक 11 फरवरी, 2012 (शनिवार)

लेखक : अरूण सिन्हा
प्रस्तुति : कला–जागरण

निर्देशक : सुमन कुमार
समर्पित : स्व. श्याम दास मिश्र

कथासार

'गोपा' कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के उत्तराधिकारी राजकुमार सिद्धार्थ (गौतम) की पत्नी है। गौतम को वृद्धायु, व्याधि एवं मृत्यु देखकर यह संसार सर्वदुःखमय लगने लगा। वह अपने बाल–सखा सारथी छन्दक द्वारा चालित, प्रिय अश्व कन्थक द्वारा वाहित रथ पर बैठकर एक रात चुपके से गृह–त्याग करते हैं। गोपा और पुत्र राहुल को त्याग कर गौतम कठोर तप करके बुद्धत्व की प्प्ति करते हैं।

बुद्धत्व प्राप्ति के एक वर्ष पश्चात् सिद्धार्थ कपिलवस्तु पधारते हैं। महाराज शुद्धोदन राजपाट से विमुख हो चुके हैं। राजकुमार सौन्दर्यानन्द राजकाज चला रहे हैं। द्विजों ने गौतम बुद्ध को पाखण्डी और बौद्ध धर्म को पाखण्ड धर्म घोषित कर दिया है। इसी धार्मिक और राजनैतिक परिवेश में गौतम बुद्ध का कपिलवस्तु में आगमन होता है।

गोपा के धैर्य का बाँध टूट जाता है, वही गोपा अपने पुत्र राहुल को बुद्ध की शरण में समर्पित कर देती है। वह स्वयं भी भिक्षुणी के रूप में 'धम्म' की शरणागत हो जाती है। 'गोपा' की यही व्यथा, अन्तर्वेदना और त्याग उसे यथार्थरूप में ''यशोधरा'' कहलाने की अधिकारिणी बनाती है।

लेखक अरूण सिन्हा के उद्‌गार – गौतम बुद्ध की पत्नी गोपा अर्थात् यशोधरा की अन्तर्दशा की अभिव्यक्ति प्रसव–वेदना से पारगमन के समान है। क्योंकि जहाँ वाणी मूक हो जाती है, शब्द अपना अर्थ भूल जाते हैं, संवेदनाएँ अपना प्रभाव खो देती हैं और सहनशीलता धैर्य की बांध तोड़ देती है, वहीं से गोपा की अन्तर्वेदना प्रारम्भ होती है। मुझ जैसे अकिंचन कवि की लेखनी में यह सामर्थ्य कहाँ जो गोपा के चरित्र को साकार कर सके। अगर मैं इसकी अन्तर्व्यथा को मात्र स्पर्श भी कर सकूं तो यह मेरी उपलब्धि होगी। इस नृत्य नाटिका के सृजन का श्रेय मैं अपने गुरु सुमन कुमार जी को देता हूँ। जैसे महासागर को लोटे में समेटना दुष्कर है वैसे ही गोपा को छोटी सी नाटिका में सहेजना असंभव है। मेरी गोपा दर्शकों को सादर समर्पित।

नृत्य निर्देशिका एवं गोपा (यामिनी) के उद्‌गार– रंगमंच, दूरदर्शन और आकाशवाणी से जुड़ी यामिनी एक प्रतिभाशाली नृत्य निर्देशिका हैं। कोलकाता, इलाहाबाद, दिल्ली, राजगीर, बोध गया, वैशाली आदि स्थलों पर आयोजित समारोहों में उन्होंने भाग लेकर सुधि दर्शकों के समक्ष अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। जब उन्हें गुरु सुमन कुमार ने गोपा में मुख्य भूमिका का दायित्व सौंपा तब वह हतप्रभ हो गयीं। गोपा में लिखे गीतों को नृत्य में ढालना उनके लिए कठिन प्रतीत हुआ। क्योंकि गोपा मात्र विप्रलम्भा नायिका ही नहीं थी। वह अनुरागिनी गोपा और मानिनी गोपा दोनों चरित्र में जी रही थी। याचक पति से गोपा को कई क्षोभ थे। 'यशोधरा' तो उसी दिन से केवल गोपा हो कर रह गयी, जिस दिन उसके पति का साथ छूटा था।' इस विरोधाभास चरित्र को मैं कितना सार्थक बना सकी हूँ, इसके निर्णायक आप सुधि दर्शक गण हैं। यदि मेरे अभिनय में कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तब क्षमा प्रार्थी हूँ।

संगीतकार मनोरंजन ओझा के उद्‌गार– गोपा नृत्य नाटिका के गीतों को सजाने में मुझे केवल एक रात में चार घंटे का समय मिला था। 'कह रहा मन चाँद छू ले'' गीत का धुन बना कर मैं पुलकित हो गया था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे गोपा के जीवन काल का सर्वाधिक हर्ष का समय यही रहा होगा। 'प्रियतम मुझसे कहकर जाते' गीत में नारी हृदय के पति विछोह की पीड़ा को संगीत के द्वारा समझाने का मेरा यह छोटा सा प्रयास है। आभार प्रकट करता हूँ इस नाटिका के लेखक अरूण सिन्हा के प्रति और नाट्य निर्देशक सुमन कुमार के प्रति जिन्होंने इतना बड़ा दायित्व मेरे जैसे तुच्छ संगीतकार को दिया।

सुमन कुमार, परिकल्पक एवं निर्देशक

''बुद्धम् शरणं गच्छामि'' की आवाज आज भी गूँज रही है फिजा में। हमारी प्राचीन गरिमा आज भी भगवान बुद्ध को इतिहास के पृष्ठों में धरोहर की तरह अंकित की हुई है। मगध और वैशाली की पावन तपोभूमि समस्त आध्यात्मिक चेतनाओं को अपने अन्तःस्थल में संजोये हमारा सम्यक् मार्ग–दर्शन कर रही है। परन्तु विडंबना है कि गोपा यानी यशोधरा को संभवतः सभी ने बिसरा दिया है। आज की नई पीढ़ी, जो भारतीय संस्कृति–परम्परा से दूर होती जा रही है, को आध्यात्मिक चेतना के प्रति अनुप्रेरित करने हेतु मैंने 'गोपा' नृत्य नाटिका के मंचन को श्रेयष्कर समझा। दो वर्षों के अथक प्रयास के बाद इस अभिकरण पर कार्य करने की हिम्मत जुटा सका हूँ। अपने सीमित संसाधनों के बल पर इस रंग–शिल्प को प्रायोगिक बिम्बों के साथ मंचित कर आप दर्शकों को समर्पित कर रहा हूँ। नृत्य–गीत–संगीत–कथानक को केवल गोपा के इर्द–गिर्द रखकर यह नाट्य प्रस्तुति, भगवान बुद्ध के अमर संदेश–''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' को आज के नैतिक प्रदूषित विश्व की अनिवार्यता मानकर, कण–कण तक पहुँचाने का भागीरथ प्रयास है।

Scanned by CamScanner

पात्र–परिचय

1.	भगवान बुद्ध (गौतम)	– निलेश्वर मिश्रा
2.	यशोधरा (गोपा)	– यामिनी
3.	राहुल	– अंशिका राज
4.	शुद्धोदन	– अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा
5.	छन्दक	– शैलेश जमैयार
6.	नन्द	– रमेश सिंह
7.	सुन्दरी	– कोमल कृति
8.	हेम कण्डिका	– प्रीति सिन्हा
9.	वाग्लायन	– मिथिलेश कुमार
10.	सारिपुत्र	– शिव शंकर रत्नाकर
11.	नवकम्मिक	– अभय
12.	आनन्द	– संजय राय
13.	व्याघ्र	– उदय
14.	बौद्धभिक्षु	– अभिषेक, कुणाल सिकन्द
15.	नृत्य कलाकार	– शालिनी राज, अनु, शिल्पी,, श्वेता कुमारी, प्रीति कुमारी, रश्मि,सोनाली, प्रियंका कुमारी, बलवीर सिंह, रवि प्रकाश, आदित्य तिवारी, सुनित ठाकुर, सुमित कुमार, हीरा लाल राय।

मंच के पीछे

कला निर्देशक	– संजीत कुमार
संगीत निर्देशन और मुख्य स्वर	– मनोरंजन ओझा
गायिका	– नन्दिता चक्रवर्ती
गायक	– परमानन्द मिश्र
नृत्य निर्देशन	यामिनी
प्रकाश सहयोग	राज कुमार शर्मा
ध्वनि	उपेन्द्र
रूप–सज्जा	आदिल रशीद
वस्त्र–विन्यास	अनु, प्रीति, रजनी शर्मा, आंचल
प्रस्तुति–नियंत्रक	रोहित कुमार
विशेष सहयोग	डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सुमन पटेल,

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मानः–

सन् 2010 : डॉ जितेन्द्र सहाय, शल्य चिकित्सक और नाटककार

सन् 2011 : श्री गोपाल शरण, रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार

मगध कलाकार की ओर से डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मानः–

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता, पिता– श्री वंशीधर गुप्ता, जमाल रोड, पटना

: श्रीमती रंजीता जयसवाल, पति– श्री संजय कुमार गुप्ता, सीवान

सन् 2011 : श्रीमती रंजीता जयसवाल, पति– श्री संजय कुमार गुप्ता, सीवान

: श्री सुनील कुमार सिंह, पिता– श्री भुवनेश्वर प्रसाद सिंह

: सुश्री साक्षी प्रिया, पिता– श्री धनंजय कुमार पाण्डेय

मगध कलाकार और कला–जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाट्य–पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : श्री आशीष कुमार मिश्र, रंगकर्मी और पत्रकार, पिता–श्री वैद्यनाथ मिश्र

Scanned by CamScanner

सत्य हरिश्चन्द्र

12 फरवरी, (रविवार)

लेखक : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रस्तुति : एच.एम.टी., पटना

निर्देशक : सुरेश कुमार हज्जु
समर्पित : स्व. जगजीत सिंह

कथासार

'सत्य हरिश्चन्द्र' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की अद्वितीय कृति है, जिसमें एक तरफ विश्वामित्र का क्रोध, इन्द्र का सत्ता–लोभ, नारद की चुगलखोरी है वहीं दूसरी ओर राजा हरिश्चन्द्र का दान, त्याग तथा सत्य है, तो रानी शैव्या का पातिव्रत धर्म तथा पुत्र–प्रेम है। राजा हरिश्चन्द्र का दान तथा सत्य देख नारद, इन्द्र दरबार में राजा इन्द्र के कान भरते हैं। स्वर्ग लोक छिन जाने के भय से इन्द्र विश्वामित्र को राजा हरिश्चन्द्र के विरुद्ध भड़काते हैं। विश्वामित्र हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेते हैं। इस परीक्षा के कारण रानी शैव्या और पुत्र रोहिताश्व को एक ब्राह्मण तथा राजा हरिश्चन्द्र को डोम के हाथ बिकना पड़ता है। अन्त में जब हरिश्चन्द्र अपने ही पुत्र की अन्तिम क्रिया के लिए शैव्या से आधा गज कफन, कर के रूप में मांगता है तो तीनों लोक कांप उठता है और विश्वामित्र उनकी परीक्षा रोक लेते हैं। फिर हरिश्चन्द्र को देवताओं द्वारा उनका पुत्र तथा राज्य दोनों वापस मिल जाता है।

सुरेश कुमार हज्जु, परिकल्पक एवं निर्देशक

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृति 'सत्य हरिश्चन्द्र', जीवन के विभिन्न आयामों, प्रवृतियों तथा अनुभूतियों की प्रतीकात्मकता है। यह एक नाटक नहीं, बल्कि एक नाटक के भीतर विभिन्न सामाजिक अवस्थाओं, अवधारणाओं और सरोकारों को दिखाने वाले कई नाटक हैं, जो अलग–अलग पात्रों के माध्यम और स्थितियों के रूप में उभर कर सामने आता है। इस नाटक का खास पहलू है–"सत्य" जो आज के इस बदलते परिवेश में हाशिए पर खड़ा है। इसलिए इस नाटक की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

मैं अपने प्रत्येक नाटक में कलाकारों की कमी झेल रहे पटना रंगमंच को बढ़ावा देने के लिए तथा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नए–नए कलाकारों को अवसर प्रदान करता हूँ। अतः इस नाटक में भी कुछ पुराने कलाकारों के साथ ज्यादा नए कलाकार दिखाई देंगे। इसके साथ–साथ मैं झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले बच्चों के साथ भी रंगमंच कर रहा हूँ। ये बच्चे नुक्कड़–नाटकों के साथ–साथ मंच नाटकों में भी लगातार सक्रिय हैं।

पात्र–परिचय

1. हरिश्चन्द्र	:	राजू मिश्रा
2. इन्द्र	:	सत्यजित केशरी
3. विश्वामित्र	:	निशांत कुमार
4. नारद	:	राजीव झा
5. रोहिताश्व	:	रितेश शर्मा
6. शैव्या	:	वीणा गुप्ता
7. पुरोहित	:	बलिराम पाण्डेय
8. प्रधानमंत्री/वृद्ध	:	प्रियदर्शी अजीत
9. भैरव/विष्णु	:	अभिजीत कुमार पाण्डेय
10. पाप/ब्रह्मा	:	प्रदीप्त मिश्रा
11. डोम/महेश	:	कुणाल देव
12. द्वारपाल/सत्य	:	हरेन्द्र कुमार गुड्डू
13. द्वारपाल/बटुक	:	राहुल राज
14. कोढ़ी व्यक्ति	:	राहुल कुमार रवि
15. बेटी	:	नेहा कुमारी
16. भूत–पिशाच	:	रोहित चन्द्र, निकेश कुमार, राहुल राज, हरेन्द्र कुमार गुड्डू
17. लाश	:	रोहित कुमार, प्रिंस कुमार, ऋषभ कुमार, प्रेम राज, प्रभु राजत
18. कुत्ता/सियार	:	निकेश कुमार, सुदर्शन शर्मा, रोहित चन्द्रा, सन्नी कुमार, चन्दन कुमार
19. सहेली	:	शबाना आफरीन, शब्दा हज्जु
20. नर्त्तकी	:	अंजली शर्मा, शब्दा हज्जु, बबीता शर्मा, संजना राज
21. प्रजा	:	रंजन कुमार, समीर कुमार, सन्नी कुमार, राहुल राज, रोहित चन्द्र, राहुल कुमार रवि, निकेश कुमार, शब्दा हज्जु, स्वरा हजजु, अक्षरा हज्जु, प्रियदर्शी, हरेन्द्र कुमार गुड्डु, बबीता शर्मा, सजना राज, नेहा कुमार, निधि कुमारी आदि।

नेपथ्य से

हार्मोनियम	–	मार्कण्डेय पाण्डेय
नाल	–	बृज बिहारी मिश्रा
ढोलक	–	चन्दन घोष
खंजड़ी	–	रोहित चन्द्रा
वस्त्र–विन्यास	–	निकेश कुमार
रूप–सज्जा	–	उपेन्द्र कुमार/हीरा लाल
सहयोग	–	राहुल रवि, राहुल राज
मंच व्यवस्था	–	भीम पासवान/शब्दा हज्जु
फोटोग्राफी	–	मनोज कुमार/उत्पल कांत
विडियोग्राफी	–	सुजय भट्टाचार्या
संगीत	–	बृज बिहारी मिश्रा/राजू मिश्रा
प्रकाश परिकल्पना	–	विज्येन्द्र टॉक/राजकुमार शर्मा

Scanned by CamScanner

शताब्दी के स्वर

13 फरवरी, सोमवार

नाट्य संयोजन – गणेश कुमार, शम्भू साह

प्रस्तुति : आकाश गंगा रंग चौपाल एसोशिएसन, बरौनी, बेगूसराय (बिहार)

समर्पित : स्व. भूपेन हजारिका

नाट्य संयोजक और निर्देशक के उद्‌गार

आदि काल से ही बिहार की पावन धरती ऐसे सपूतों को जन्म देती रही है, जिसने देश–दुनिया की तस्वीर को एक नई दिशा देने में सक्षम रही है। विश्व के प्रथम गणतन्त्र की जननी वैशाली भविष्य की समृद्धि के लिए भले ही वर्त्तमान संघर्ष के दौर से गुजर रही हो, लेकिन अतीत के गौरव को विस्मृत करना कठिन है। गौरवशाली स्वर्णिम अतीत से लेकर अब तक घटित हर घटनाक्रम–चाहे वह ऐतिहासिक हो या पौराणिक, राजनीतिक हो या शैक्षणिक, सामाजिक हो या क्रांतिकारी, कला–संस्कृति हो या साहित्यिक,–हर बदलते परिवेश का स्वर बुलन्द रहा है। वही बुलन्द स्वर है–शताब्दी के स्वर। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ बिहार की उपस्थिति नहीं रही हो। पर्यटन, खेल, साहित्य, कला, उद्योग, पर्व–त्योहार, मेला–महोत्सव, गीत–संगीत–नृत्य–नाटक की मनमोहक झलक है–शताब्दी के स्वर में। अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त धरोहरों को सहेज कर रखने की आवश्यकता है। इन्हीं धरोहरों के बल पर हम अपने बिहार का सुखद भविष्य बना सकते हैं।

मंच पर

1. प्रिया भारती
2. पूजा भारती
3. प्राची कुमारी
4. चाँदनी कुमारी
5. पल्लवी जोशी
6. ओणम जोशी
7. राजमणि कुमारी
8. अंकिता कुमारी
9. सलोनी कुमारी
10. तब्बू कुमारी
11. नेहा कुमारी
12. कुन्दन कुमार
13. मनीष कुमार
14. रूपेश कुमार
15. ऋषिदेव कुमार
16. नरेश कुमार
17. सुजीत कुमार
18. रवि वर्मा
19. रोहित वर्मा
20. पी.के. विनोद
21. राधे कुमार
22. विजय आनन्द

नेपथ्य में

संगीत	–	सीताराम सिंह
पारम्परिक संगीत	–	अमर ज्योति, नरेश कुमार
गायक/वादक	–	जयमाला कुमारी, मधु, कुणाल, दिनेश, सुचिन, अशोक पासवान, ज्ञानी, शम्भू
नृत्य संयोजन	–	रामू, पल्लवी, प्राची
वस्त्र–विन्यास	–	प्रिया, चांदनी, राजमणि
रूप–सज्जा	–	मनीष, प्राची, ऋषिदेव
प्रोपर्टी	–	रूपेश, रवि, रोहित, पूजा
प्रकाश	–	आर.टी. राजन
प्रोजेक्टर	–	सीता राम शर्मा
टीम मैनेजर	–	शम्भू साह
सहायक निर्देशक	–	कुन्दन कुमार, गौरव

Scanned by CamScanner

पाटलिपुत्र का राजकुमार

दिनांक 14 फरवरी, 2012 (मंगलवार)

लेखक : डॉ. चतुर्भुज
निर्देशक : रवि मिश्रा 'बाबा'
प्रस्तुति : अदाकार ख्वाहिश सांस्कृतिक दर्पण, पटना
समर्पित : स्व. शम्मी कपूर

कथासार

पालि–ग्रंथ 'महावंश' के अनुसार बिन्दुसार के पुत्रों में सबसे अधिक पुण्य, तेज, बल और ऋद्धि वाले अशोक थे। वह एकछत्र राज्य करना चाहते थे और चार वर्षों के बाद उन्होंने पाटलिपुत्र में अपना अभिषेक कराया। कलिंग युद्ध के बाद अशोक बौद्ध हो गये थे। फाहियान, यूवान–च्वांग, इत्सिंग आदि चीनी यात्रियों ने अशोक को बौद्ध कहा है। सम्राट् अशोक की पाँच पत्नियों का उल्लेख मिलता है। प्रथम पत्नी देवी के गर्भ से ही राजकुमार महेन्द्र और राजकुमारी संघमित्रा का जन्म हुआ था। कुणाल की जननी पद्मावती थी। बौद्ध साहित्य 'दिव्यावदान' का एक अध्याय है कुणालावदान। इस नाटक की कथा मूलतः कुणालावदान पर आधारित है। कुणाल के जन्म के पश्चात् अशोक ने उसका नाम धर्म विवर्धन रखा। पुत्र की आँखें बड़ी सुन्दर थीं। मंत्रियों ने कहा–महाराज ऐसी आँखें मनुष्य की नहीं होती। हिमेन्द्रराज पर्वत के शृंग पर निवास करने वाले अपार जलराशि में उत्पन्न प्रवाल पुष्प के समान कुणाल नाम के एक पक्षी की आँखें ऐसी होती है।

एक दिन सम्राट् अशोक राजकुमार कुणाल के साथ यश नाम के अर्हत से मिलने के लिए कुक्कुटाराम को गये। यश ने कुमार को कहा–"कुमार चक्षु को अनित्य जानो। ये नेत्र सहस्त्रों दुखों के कारण हैं।" कुणाल की पत्नी का नाम कांचनमाला था। जब तक्षशिला में विद्रोह हुआ तो उसके दमन हेतु कुणाल को भेजा गया। विद्रोह का दमन हो गया। इसी बीच अशोक बीमार पड़े। रानी तिष्यरक्षिता ने सम्राट् की बड़ी सेवा की और पुरस्कार में एक सप्ताह तक राज्य करने की अनुमति पायी। इसी बीच तिष्यरक्षिता ने कुणाल को नेत्रहीन करने की आज्ञा तक्षशिला भेज दी। कुणाल को नेत्रहीन कर दिया गया।

काफी दिनों बाद नेत्रहीन कुणाल भटकते हुए पाटलिपुत्र आया जहाँ पिता–पुत्र का मिलन हुआ। दिव्यावदान से ही ज्ञात होता है कि पूर्व जन्म में कुणाल ने पाँच सौ मृग का शिकार कर उनके नेत्र निकलवा लिये थे, उसी का विपाक उन्हें इस जन्म में भोगना पड़ा। कहा जाता है कि तिष्यरक्षिता ने ईर्ष्यावश कुणाल के नेत्र नष्ट कराये। लेकिन वह उसकी हत्या भी तो करवा सकती थी। नेत्रहीन कराने से भेद खुलने का भी भय था। फिर भी इतिहास को मर्यादित रखते हुए लेखक ने इस नाटक में घटनाएं वही रखी है। कुणाल की आँखें जाती है। तिष्यरक्षिता पर लांक्षण भी लगता है। लेकिन दोषी वह नहीं बल्कि कोई दूसरा व्यक्ति है।

रवि मिश्रा 'बाबा', निर्देशक

रवि मिश्रा 'बाबा' ने सन् 1983 ई. से दीपक श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रस्तुत अत्याचार नाटक से अपनी रंगयात्रा प्रारम्भ की। अपने 27 वर्षों की रंगयात्रा में इन्होंने पगला घोड़ा, रश्मिरथी, हमीदा बाई का कोठा, बलि का बकरा आदि लगभग 40 नाटकों में मुख्य भूमिकाएं कर दर्शकों का प्यार और आशीर्वाद पाया। अभिनय के अलावा इन्होंने बैंड मास्टर, बुद्धम् शरणम् गच्छामि, जनता पागल हो गयी जैसे लगभग बारह नाटकों का निर्देशन किया। अपने नाटकों के प्रदर्शन से श्री बाबा ने राज्य स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान पाया और पुरस्कृत हुए। अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में विशेष समीक्षक और निर्णायक की भूमिका भी इन्होंने अदा की है। रंगमंच के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य एवं उपलब्धि के लिए सन् 2000 में फिल्म अभिनेता और सांसद राज बब्बर के कर–कमलों द्वारा इन्हें आगरा में सम्मानित किया गया। कई भोजपुरी फिल्म एवं कई धारावाहिकों में अभिनय। इन दिनों श्री बाबा शिक्षण के कार्य में व्यस्त हैं।

पात्र–परिचय

अशोक	:	रवि मिश्रा 'बाबा'
कुणालदेव	:	सुधीर कुमार
कालसेन	:	सुभाष चन्द्रा
नायक	:	पटनिया फौजी
विशालाक्ष	:	रंजन कपूर
प्रतिहारी	:	पृथ्वीराज
प्रतिहारी–2	:	राकेश कुमार
प्रतिहारी–3	:	राजू शंकर
तिष्यरक्षित	:	सुबन्ति बनर्जी
कांचनमाला	:	प्रीति सिन्हा

पर्दे के पीछे

संगीत	:	डॉ. किशोर सिन्हा, लक्ष्मी मिश्रा
मंच सज्जा	:	प्रवीण कुमार सप्पू
वस्त्र–विन्यास	:	तान्या बनर्जी
प्रकाश	:	दीपक श्रीवास्तव
रूप–सज्जा	:	अशोक घोष
सहयोग	:	आजाद शक्ति, माधुरी शर्मा, रवि भूषण, मिथिलेश सुमन, आराधना, संताष कुमार, आधार मिश्रा, आभाष मिश्रा, रागिनी कुमारी, रीतेष, ऋषिकेश, अर्चना कुमारी, मीनाक्षी मिश्रा।

Scanned by CamScanner

॥ जय सहकारिता ॥ ॥ जय भारत ॥

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

दि कोशी सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी लि.

प्रधान कार्यालय - गाँधी पथ, सहरसा (बिहार)

फोन : 06478-224763

सदस्यों की सेवा, मुस्कान के साथ

हमारी जमा योजनाएँ :

1. बचत खाता, 2. दैनिक जमा योजना, 3. मासिक जमा योजना, 4. सावधि जमा योजना, (FD), 5. महिला समृद्धि योजना, 6. कोशी विकास पत्र, 7. लघु बचत योजना, 8. सदस्यों को ऋण सुविधा।

हमारी शाखाएँ :

1. पूरब बाजार, सहरसा, 2. नगर परिषद् के सामने, सुपौल, 3. स्टेशन रोड, मधेपुरा, 4. गुदरी बाजार, मुरलीगंज, 5. सिमराही बाजार, 6. वीरपुर, थाना के सामने, 7. चौसा चौक, उदाकिशुनगंज

प्रस्तावित शाखाएँ

त्रिवेणीगंज, निर्मली, सिमरी बख्तियारपुर, सोनवर्षा राज, बिहारीगंज, आलमनगर, ग्वालपाड़ा, सिंहेश्वर

कार्यकारिणी के सभी
निदेशक

Scanned by CamScanner

सहकारिता का गौरव

'आपका अपना बैंक'

पाटलिपुत्र सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि.

R.B.I. लाइसेंस सं.-ग्रा.आ. ऋण वि.डी. सी.सी.बी./पैट-02/2009-10

मदनधारी भवन, एस.पी. वर्मा रोड, पटना-800 001

यह बैंक बी.आर. एक्ट. के प्रावधानों के अन्तर्गत 271.86 करोड़ कार्यशील पूंजी के साथ पटना जिले में 20 शाखाओं के माध्यम से ग्राहकों को निरंतर सम्पूर्ण बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहा है। गत वर्ष की उपलब्धि आँकड़ों में-

क्रमांक	विवरण	31.3.09	31.3.10	31.3.11
1.	हिस्सा पूँजी	4.49 करोड़	4.61 करोड़	5.07 करोड़
2.	संचित कोष	16.29 करोड़	18.28 करोड़	20.78 करोड़
3.	जमा	145.10 करोड़	219.31 करोड़	214.03 करोड़
4.	निवेश	116.98 करोड़	198.40 करोड़	184.35 करोड़
5.	ऋण एवं अग्रिम	33.76 करोड़	30.08 करोड़	35.20 करोड़

विशेष योजनाएँ:-

1. जमा बीमा योजना के अन्तर्गत ग्राहकों की जमा राशि सुरक्षित।
2. ग्राहकों के लिए अवीवा लाइफ इंश्योरेंस के माध्यम से बीमा की सुविधा।
3. मात्र 7 प्रतिशत ब्याज दर पर कृषक सदस्यों को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से कृषि ऋण की सुविधा।
4. किसान क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए अल्प प्रीमियम पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा की सुविधा।
5. कृषकों के लिए फसल बीमा की सुविधा।
6. ग्राहकों के लिए आवास ऋण, कार आदि अनेक प्रकार की ऋण की सुविधा।
7. बाँकीपुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ शाखा में लॉकर की सुविधा।
8. लघु जमाकर्त्ताओं के लिए 'दैनिक जमा योजना'।

अभय झा
प्रबंध निदेशक

संजय कुमार सिंह, भा.प्र.से.
प्रशासक

Scanned by CamScanner

राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित

बिहार–झारखंड

बुद्ध मार्ग, पटना

बिहार के राज्यपाल देवानन्द कुँअर का स्वागत करते अध्यक्ष विजय कुमार सिंह

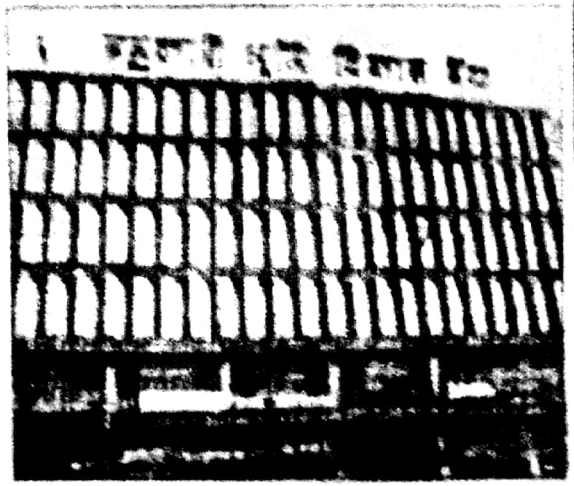

झारखंड के राज्यपाल सैयद अहमद का स्वागत करते अध्यक्ष विजय कुमार सिंह

श्री विजय सिंह, अध्यक्ष एवं बिहार-झारखंड के
प्रतिनिधियों तथा बैंक से जुड़े किसान भाइयों को

नववर्ष 2012 पर
हार्दिक बधाई

राघवेन्द्र पाल सिंह
प्रबंध निर्देशक
भूमि विकास बैंक पदाधिकारी एसोसिएशन

Scanned by CamScanner

LAKHANHOMES

Lakhan homes ltd.

An ISO 9001:2008 Certified Company

Regd. Office : Lakhan Sona, Bailey Road , Patna, BIHAR Ph : 92043 24822, 92043 24823
For assistance call : 92040 94171 - 173, E-mail : info@lakhanhomes.com
NCR Office : G33, Parshwanath Estate, Greater Noida, Visit us at : http://www.lakhanhomes.com

LAKHANHOMES

built for nation | built for you

CALL | 92043 24822, 92043 24823

Scanned by CamScanner

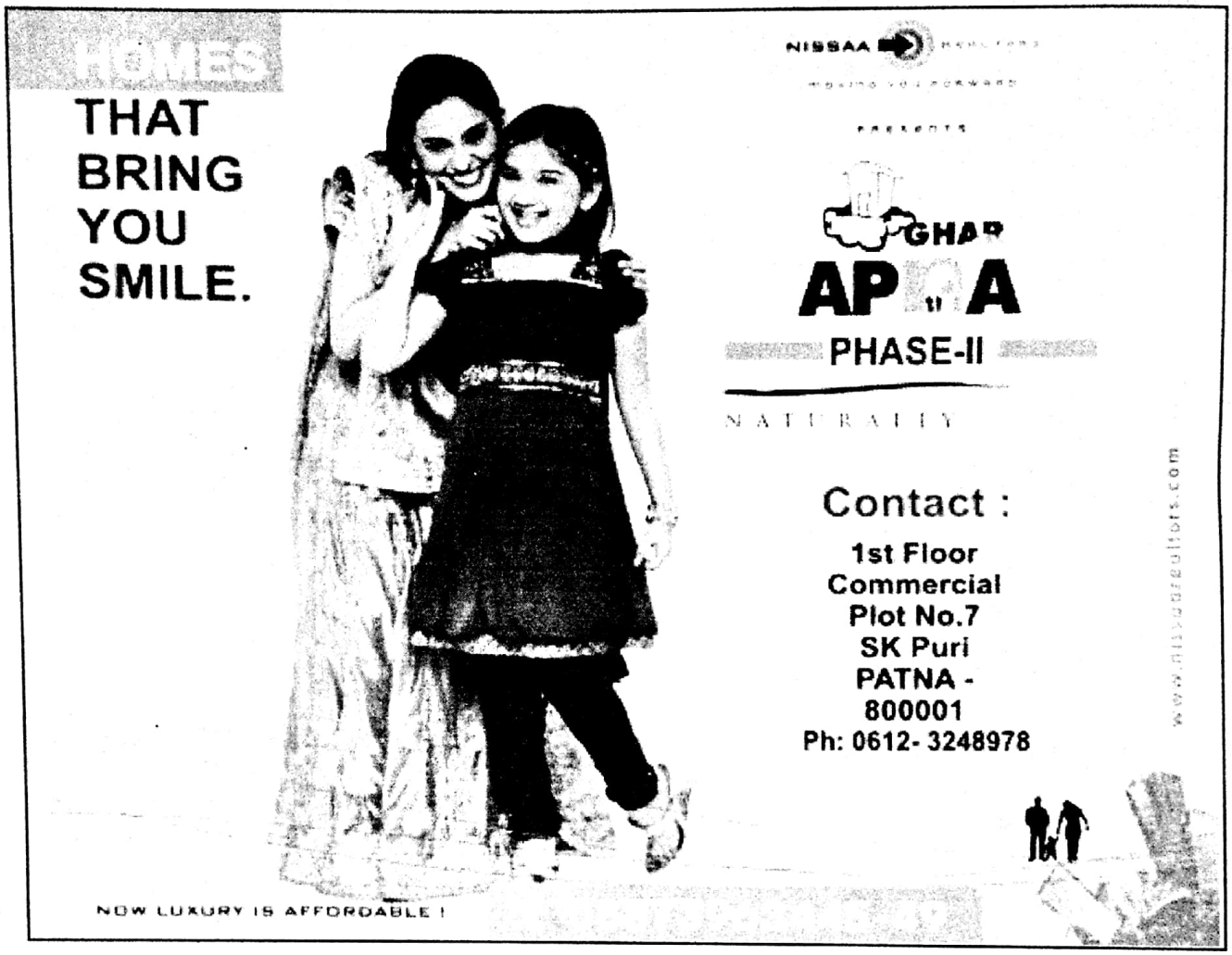

कला-जागरण, पटना की आगामी प्रस्तुति

दिनांक 12 एवं 13 मार्च, 2012

अपने-पराये

लेखक- सतीश कुमार सिन्हा

14 मार्च, 2012

हत्यारिन उर्फ सजा

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी पर आधारित

प्रदर्शन स्थल - कालिदास रंगालय, पटना

सौजन्य- केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

Scanned by CamScanner

क्या आप जानते हैं ?

बिहार में ...

- प्रति व्यक्ति औसतन 230 रूपये सिगरेट तथा 43 रूपये बीड़ी पर प्रति माह खर्च होते है।
- प्रत्येक 2 में से एक वयस्क किसी-न-किसी रूप में तम्बाकू का सेवन करते हैं।
- 66 प्रतिशत पुरूष और 40 प्रतिशत महिलायें तम्बाकू का सेवन करती है।

तम्बाकू छोड़ो, जिन्दगी से नाता जोड़ो

तम्बाकु सेवन से हृदय की बीमारी, फेफड़ों एवं मुँह का कैंसर, पेट में अल्सर, दांतों में सड़न आदि बीमारियां हो सकती है।

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार

Scanned by CamScanner

सुधा

100% शुद्ध एवं ताजा

खुशियों के संग
सुधा के संग।

भारत में सर्वाधिक सफल दुग्ध सहकारी समितियों में एक
सर्वश्रेष्ठ कम्फेड HACCP, ISO प्रमाणित डेयरियों
वाली दुग्ध उत्पादकों की सहकारी समिति

सुधा उत्पाद के लिए अपने निकटतम डेयरी या विक्रेता से सम्पर्क करें

पटना डेयरी प्रोजेक्ट, फोन (0612) 2253316, 2252542, बरौनी डेयरी, फोन (06279) 232202, 232903, मुजफ्फरपुर डेयरी, फोन (0621) 2265549, 2235087, समस्तीपुर डेयरी, फोन (06274) 222172, 223680, दरभंगा डेयरी, फोन (06272) 258724, 258691, आरा डेयरी, फोन (06182) 239484, 236694, मगध डेयरी प्रोजेक्ट, गया, फोन (0631) 2421741, 2425900, भागलपुर डेयरी, फोन (0641) 2400433, 2404769, कोशी डेयरी प्रोजेक्ट, पूर्णियाँ फोन (06454) 229958 राँची डेयरी, फोन (0651) 2440832, 2440723, जमशेदपुर डेयरी, फोन (0657) 2408438, 2200443, बोकारो डेयरी, फोन (06542) 257098, 256499

COMFED

बिहार स्टेट मिल्क को-ऑपरेटिव फेडरेशन लि.

डेयरी डेवलपमेन्ट कॉम्प्लेक्स, पी.ओ.: बी.भी. कॉलेज, पटना - 800 014
फोन: 0612-2228953, 2220387, 2224083, फैक्स: 0612-2228306
E-mail : comfedpatna@gmail.com; compfed@sify.com, Website : www.compfed.co.in

वातायन

Scanned by CamScanner